गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

# गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 258
दि. 19.01.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा


# 2027 में बदलेगी गुजरात की सत्ता: केजरीवाल का BJP पर हमला, AAP को परिवर्तन का वाहक बताया

**(जीएनएस)**। अहमदाबाद। आम आदमी पार्टी (AAP) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने अहमदाबाद में रविवार को आयोजित जनसभा में भारतीय जनता पार्टी (BJP) पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि वर्ष 2027 में गुजरात की सत्ता बदलेगी। उन्होंने दावा किया कि राज्य की जनता अब बदलाव के लिए पूरी तरह तैयार है और आम आदमी पार्टी इस बदलाव का प्रमुख वाहक बनेगी। केजरीवाल की यह सभा भाजपा के खिलाफ राजनीतिक दबाव और उनके कथित भ्रष्टाचार को उजागर करने का मंच बनी।

केजरीवाल ने अपने भाषण की शुरुआत हिंदी की एक कहावत का उल्लेख करके की: "विनाशकाले विपरीत बुद्धि। जब किसी का विनाश आता है तो सबसे पहले उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। गुजरात में BJP के साथ भी यही हो रहा है।" उन्होंने कहा कि 30 साल से सत्ता में रहने के बावजूद अब BJP की पकड़ कमजोर पड़ने लगी है। उनका आरोप था कि पार्टी ने सत्ता में लंबे समय तक रहने के बावजूद राज्य के विकास में असमानता फैलाई है और जनता की अपेक्षाओं को नजरअंदाज किया है।

उन्होंने अहमदाबाद के निकोल इलाके में आयोजित सभा को रोकने की BJP की कथित कोशिशों पर भी प्रकाश डाला। केजरीवाल ने कहा कि स्टेज और कुर्सियां तोड़ दी गईं, और अनुमति नहीं देने का प्रयास किया गया ताकि AAP की सभा न हो सके। हालांकि, तमाम अड़चनों और सरकारी बाधाओं के बावजूद हजारों लोग सभा में पहुंचे और उन्होंने पार्टी का समर्थन किया।

केजरीवाल ने हाल ही में AAP नेता गोपाल इटालिया पर हुए हमले का भी जिक्र किया। उन्होंने आरोप लगाया कि किसी व्यक्ति ने इटालिया पर जूता फेंका और बाद में उसने वीडियो जारी कर यह स्वीकार किया कि BJP के एक नेता ने उसे 50 हजार रुपये और शराब देकर यह काम करने को कहा। इस घटना को उन्होंने बीजेपी द्वारा विपक्षी नेताओं और कार्यकर्ताओं पर दबाव बनाने की कोशिश के रूप में पेश किया।

केजरीवाल ने कहा कि उनकी पार्टी न तो टूटती है और न बिकती है। उन्होंने जोर देकर कहा कि उनके नेताओं और कार्यकर्ताओं को किसानों और आम जनता के हक में आवाज उठाने के कारण जेल में डाला जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि BJP ने गुजरात को तीन दशकों में खोखला कर दिया है—किसान परेशान हैं, शिक्षा और स्वास्थ्य प्रणाली चरमरा गई है, व्यापारी असंतुष्ट हैं, और युवा रोजगार के बजाय नशे की ओर धकेले जा रहे हैं।

BJP पर भ्रष्टाचार फैलाने के आरोप भी उन्होंने लगाए। केजरीवाल ने कहा कि पंचायत से लेकर नगरपालिका तक भ्रष्टाचार गहराया है, और जो भी इसके खिलाफ आवाज उठाता है, उसे जेल में डाल दिया जाता है। उन्होंने जनता से अपील की कि डर से न दबें और जेल के भय को नजरअंदाज करें। उनका कहना था कि जनता का डर खत्म होने पर ही बदलाव संभव है।

केजरीवाल ने स्पष्ट रूप से दावा किया, "2027 में गुजरात की सत्ता बदलेगी। अब बदलाव तय है।" उन्होंने जोर देकर कहा कि आम आदमी पार्टी राज्य में बदलाव का सबसे बड़ा वाहक बनेगी और जनता की उम्मीदों पर खरा उतरेगी। इस सभा में उन्होंने न केवल भाजपा पर हमला किया बल्कि आम आदमी पार्टी के उद्देश्यों और मूल्यों को भी उजागर किया।

राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, केजरीवाल का यह भाषण आगामी विधानसभा चुनावों के मद्देनजर BJP पर दबाव बनाने और गुजरात में AAP की छवि को मजबूत करने की रणनीति का हिस्सा है। उन्होंने जनता के बीच यह संदेश देने की कोशिश की कि पार्टी भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और सामाजिक असमानताओं के खिलाफ निर्णायक भूमिका निभा सकती है। इस भाषण से स्पष्ट है कि गुजरात में आगामी चुनाव राजनीतिक माहौल को और गरमाएंगे और AAP अपने गठन के लगभग दो दशक बाद राज्य में बड़ा राजनीतिक प्रभाव दिखाने के लिए पूरी ताकत झोंक रही है।

## कराची के शॉपिंग प्लाजा में भीषण आग, दमकलकर्मी समेत छह की मौत, 30 से अधिक घायल

**(जीएनएस)**। इस्लामाबाद। पाकिस्तान के सिंध प्रांत की राजधानी कराची में रविवार देर रात एमए जिन्ना रोड स्थित गुल शॉपिंग प्लाजा में भीषण आग लग गई। हादसे में अब तक एक दमकलकर्मी समेत छह लोगों की मौत हो गई है, जबकि 30 से अधिक लोग झुलस गए हैं। झुलसे लोगों में से 11 की हालत गंभीर बताई जा रही है।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, आग प्लाजा के ग्राउंड और पहली मंजिल पर लगी थी। शुरुआती रिपोर्ट में बताया गया कि धुएं में दम घुटने और भगदड़ के कारण पांच लोगों की जान चली गई। सिंध के गृहमंत्री जियाउल हसन लांजर ने बताया कि दमकल विभाग की 14 गाड़ियां आग बुझाने में लगी हुई थीं।

दमकलकर्मी और बचाव अभियान

दमकल विभाग के अधिकारियों ने आग की तीव्रता को लगातार बढ़ने वाला बताया। आग की लपटों ने कई और दुकानों को अपनी चपेट में ले लिया और कई लोग प्लाजा की छत पर शरण लेने को मजबूर हुए। चीफ फायर ऑफिसर के अनुसार, आग लगभग रात 10:15 बजे लगी, लेकिन इसकी जानकारी तड़के मिली। इस समय 20 फायर टेंडर और चार स्नोकल गाड़ियां आग बुझाने में लगी हुई थीं। साथ ही फायर फाइटिंग फोम का भी इस्तेमाल किया गया ताकि आग को फैलने से रोका जा सके।

व्यापारी और प्रशासन की प्रतिक्रिया

कराची व्यापारी एसोसिएशन के अध्यक्ष तनवीर पास्ता ने बताया कि आग के समय इमारत के अंदर लगभग 80 से 100 लोग फंसे हुए थे। प्लाजा में 1,200 दुकानें हैं और आग से अरबों रुपये का नुकसान होने का अनुमान है। उन्होंने आरोप लगाया कि न तो मुख्यमंत्री और न ही कराची के मेयर ने व्यापारी समुदाय से संपर्क किया।

कराची के मेयर बैरिस्टर मुर्तज़ा वहाब ने हादसे पर गहरा दुख व्यक्त किया और बताया कि आग बुझाने के प्रयास जारी हैं। वहीं, सुरक्षा के कारण एमए जिन्ना रोड को अंकलेसरिया चौक और सेंट्रल प्लाजा के बीच यातायात के लिए बंद कर दिया गया है। कराची यातायात पुलिस ने बताया कि ट्रैफिक को तिब्बत चौक से जुबली की ओर डायवर्ट किया जा रहा है।

विशेषज्ञों का कहना है कि कराची में इस तरह की भीषण आग की घटनाओं में सबसे बड़ी चुनौती इमारतों में उचित अग्नि सुरक्षा उपायों की कमी है। ऐसे प्लाजा और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में फायर अलार्म, इमरजेंसी निकासी और नियमित निरीक्षण की व्यवस्था का अभाव अक्सर जान-माल के नुकसान का कारण बनता है। आग की भीषणता और बड़े पैमाने पर नुकसान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इमारतों और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स की सुरक्षा को लेकर तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता है।

## झारखंड के लातेहार में भीषण सड़क हादसा, बस पलटने से 5 की मौत, 25 से अधिक घायल

**(जीएनएस)**। महुआटांड़। झारखंड के लातेहार जिले के महुआटांड़ थाना क्षेत्र में रविवार शाम एक भीषण सड़क हादसा हुआ, जिसमें अब तक पांच लोगों की मौत हो गई है और 25 से अधिक लोग घायल बताए जा रहे हैं। हादसा ओरसा घाटी के खतरनाक मोड़ पर उस समय हुआ जब यात्रियों से भरी बस अचानक पलट गई।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, दुर्घटनाग्रस्त बस में सवार सभी यात्री छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले के रहने वाले थे। ये लोग लातेहार जिले के महुआटांड़ क्षेत्र में आयोजित एक पारिवारिक शादी समारोह में शामिल होने के लिए जा रहे थे। जैसे ही बस ओरसा घाटी के तीखे और खतरनाक मोड़ पर पहुंची, चालक का वाहन पर नियंत्रण खो गया और बस पलट गई। घटना इतनी गंभीर थी कि मौके पर ही पांच लोगों की मौत हो गई।

सूत्रों के अनुसार, बस में करीब 80 लोग सवार थे। अब तक मृतकों में सभी महिलाएं शामिल हैं। आशंका जताई जा रही है कि बस के नीचे अभी

भी कुछ यात्री दबे हो सकते हैं। राहत और बचाव कार्य तीव्र गति से जारी है। घायलों को बड़ी संख्या में महुआटांड़ के सरकारी अस्पताल लाया गया, जहां अस्पताल पूरी तरह से घायलों से भर गया है। कई घायलों की हालत गंभीर बताई जा रही है, और प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें बेहतर इलाज के लिए जिला अस्पताल या नजदीकी बड़े मेडिकल संस्थानों में रेफर किया जा सकता है।

महुआटांड़ थाना प्रभारी मनोज कुमार पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और राहत एवं बचाव कार्य की निगरानी कर रहे हैं। मौके पर प्रशासनिक टीमें और एंबुलेंस तैनात की गई हैं। यह दुर्घटनाग्रस्त वाहन छत्तीसगढ़ के बलरामपुर स्थित ज्ञान गंगा हाई स्कूल की बस थी, जिसे निजी रूप से यात्रियों को ले जाने के लिए उपयोग किया जा रहा था।

विशेषज्ञ और प्रशासन का कहना है कि ओरसा घाटी का यह हिस्सा अपने तीखे मोड़ों और खतरनाक ढलानों के लिए जाना जाता है। वाहन चालकों को यहां अत्यधिक सावधानी बरतनी पड़ती है। वहीं, यह हादसा फिर एक बार यह सवाल उठाता है कि क्या पहाड़ी और घाटी क्षेत्रों में यातायात सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम हैं और यात्रियों की संख्या के अनुसार वाहनों का संचालन किया जा रहा है या नहीं।

घटना ने स्थानीय प्रशासन और पुलिस के लिए भी चुनौती पैदा कर दी है। पुलिस और राहत टीमों ने कहा कि वे सभी बचे यात्रियों को सुरक्षित निकालने और घायलों को तुरंत अस्पताल पहुंचाने के लिए पूरी ताकत झोंक रहे हैं। साथ ही, मृतकों के परिजनों को तत्काल सूचित किया गया है।

इस हादसे ने झारखंड और छत्तीसगढ़ के बीच सड़क परिवहन सुरक्षा के मुद्दे को फिर से सार्वजनिक विमर्श में ला दिया है। विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसे हादसों को रोकने के लिए दुर्घटना प्रवण क्षेत्रों में गति नियंत्रण, सड़क चिन्ह, सख्त नियम और नियमित वाहन निरीक्षण जैसी व्यवस्थाओं को और मजबूत किया जाना जरूरी है।

## मुख्यमंत्री स्टालिन ने की नए पुरस्कार की घोषणा

**(जीएनएस)**। चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने रविवार को गैर-हिंदी भाषाओं के साहित्य को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एक नए वार्षिक पुरस्कार की घोषणा की। राज्य सरकार के तत्वावधान में शुरू किए जा रहे इस सम्मान का नाम 'सेम्मोझी इल्लाकिया विरुधु' रखा गया है, जिसका अर्थ शास्त्रीय भाषा साहित्य पुरस्कार है। मुख्यमंत्री ने बताया कि इस पुरस्कार के तहत चयनित प्रत्येक भाषा की श्रेष्ठ कृति को पांच लाख रुपये की नकद राशि प्रदान की जाएगी। पहले चरण में तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, बांग्ला और मराठी भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्यिक योगदान को सम्मानित किया जाएगा। राज्य सरकार का मानना है कि क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य भारतीय संस्कृति की असली आत्मा है और इन्हें उचित मंच व सम्मान मिलना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले के समापन समारोह में अपने संबोधन के दौरान मुख्यमंत्री स्टालिन ने केंद्र सरकार पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादमी पुरस्कारों की घोषणा अंतिम समय में कथित तौर पर केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के हस्तक्षेप के कारण रोक दी गई, जबकि तमिलनाडु सरकार चाहती थी कि पुरस्कार प्रक्रिया बिना किसी राजनीतिक दखल के पूरी हो। मुख्यमंत्री ने इसे रचनात्मक स्वतंत्रता पर प्रहार बताते हुए कहा कि साहित्य, कला और संस्कृति जैसे क्षेत्रों में राजनीतिक हस्तक्षेप लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए खतरनाक संकेत है। उनके अनुसार केंद्र सरकार क्षेत्रीय राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप कर रही है, जिससे लेखकों और कलाकारों के मनोबल पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है।

स्टालिन ने कहा कि कई लेखकों, बुद्धिजीवियों और साहित्यिक संस्थाओं ने इस घटनाक्रम के बाद राज्य सरकार से हस्तक्षेप की मांग की थी।

## चीन ने शुरू किया दुनिया का पहला हाइब्रिड न्यूक्लियर पावर प्लांट, 2032 तक पूरी तरह चालू होगा

**(जीएनएस)**। बीजिंग। चीन ने पूर्वी प्रांत जिआंगसू के लियानयुंगांग में दुनिया का पहला हाइब्रिड न्यूक्लियर पावर प्लांट बनाने का महत्वाकांक्षी कदम उठाया है। यह परियोजना देश की 15वीं पंचवर्षीय योजना (2026–2030) के तहत की जा रही है और इसे 2032 तक पूरी तरह चालू करने का लक्ष्य रखा गया है। इस संयंत्र में हुआलोंग वन प्रेशराइज्ड वॉटर रिएक्टर और हाई टेम्परेचर गैस-कूल्ड रिएक्टर को एक साथ जोड़ा जाएगा। इसका उद्देश्य सिर्फ बिजली उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि औद्योगिक उपयोग और हाई-क्वालिटी स्टीम प्रदान करके परमाणु ऊर्जा के बहुआयामी इस्तेमाल की दिशा में एक नई मिसाल स्थापित करना है। विशेषज्ञों के अनुसार, यह परियोजना चीन की ऊर्जा रणनीति में एक ऐतिहासिक कदम साबित होगी और वैश्विक स्तर पर परमाणु ऊर्जा के भविष्य को बदल सकती है।

निर्माण कार्य दो चरणों में पूरा किया जाएगा। पहले चरण में दो हुआलोंग वन यूनिट और एक हाई टेम्परेचर गैस-कूल्ड रिएक्टर यूनिट बनाई जाएंगी। हुआलोंग वन यूनिट पूरी तरह चीन की थर्ड जेनेरेशन तकनीक पर आधारित हैं और इन्हें यूरोपियन यूटिलिटी रिक्वायरमेंट्स सर्टिफिकेशन प्राप्त है। इसके अलावा, यह ब्रिटेन की जेनरिक डिजाइन असेसमेंट प्रक्रिया को भी पास कर चुका है। हाई टेम्परेचर गैस-कूल्ड रिएक्टर फोर्थ जेनेरेशन तकनीक का उपयोग करता है और यह संयंत्र को पारंपरिक परमाणु ऊर्जा उत्पादन से कहीं आगे ले जाएगा। दूसरे चरण में अतिरिक्त रिएक्टर और अन्य संयंत्र सुविधाएं जोड़ी जाएंगी, जिससे उत्पादन क्षमता और भी बढ़ जाएगी और चीन की ऊर्जा आपूर्ति को विविधता और स्थिरता मिलेगी।

विशेषज्ञों का कहना है कि इस परियोजना के चालू होने पर हर साल 72.6 लाख टन कोयले की खपत कम होगी और लगभग 1.96 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में कमी आएगी। यह न केवल लियानयुंगांग क्षेत्र के पेट्रोकेमिकल उद्योग के लिए लो-कार्बन विकास को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि पूरे चीन में परमाणु ऊर्जा के स्थायी और सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देगा। इस हाइब्रिड पावर प्लांट के चालू होने से चीन की ऊर्जा रणनीति में एक नया अध्याय जुड़ जाएगा, जहां पर्यावरणीय स्थिरता और आधुनिक ऊर्जा जरूरतों को एक साथ संतुलित किया जा सकेगा।

चीन के ऊर्जा विशेषज्ञों का मानना है कि यह परियोजना वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य में चीन की अग्रणी भूमिका को और मजबूत करेगी। यह संयंत्र सिर्फ बिजली उत्पादन का स्रोत नहीं होगा, बल्कि औद्योगिक प्रक्रिया, अनुसंधान और विकास के लिए आवश्यक स्टीम और उच्च तापमान वाली ऊर्जा भी उपलब्ध कराएगा। इस कदम से चीन न केवल अपने घरेलू ऊर्जा संकट से निपटने की योजना बना रहा है, बल्कि यह वैश्विक ऊर्जा व्यापार और तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भी अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश कर रहा है।

हुआलोंग वन रिएक्टर और हाई टेम्परेचर गैस-कूल्ड रिएक्टर के संयोजन से यह संयंत्र पूरी तरह हाइब्रिड और बहुआयामी ऊर्जा उत्पादन वाला पहला परमाणु प्रोजेक्ट बन जाएगा। यह चीन के लिए तकनीकी उपलब्धियों और ऊर्जा सुरक्षा दोनों का प्रतीक है। विशेषज्ञों के अनुसार, 2032 में इस परियोजना के चालू होने के बाद यह वैश्विक स्तर पर परमाणु ऊर्जा की नई दिशा और हाइब्रिड ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण का उदाहरण प्रस्तुत करेगा।

## संपादकीय

### अमेरिकी विस्तारवाद की नई करवट: ग्रीनलैंड पर ट्रंप की नजर

अंतरराष्ट्रीय नियम-कानून को धता बताकर वेनेजुएला पर अमेरिका के हमले और वहां के राष्ट्रपति के अपहरण की चर्चा अभी समाप्त भी नहीं हुई थी कि डोनाल्ड ट्रंप ने ग्रीनलैंड पर कब्जा करने का एलान कर दिया। हालांकि ग्रीनलैंड को हासिल करने की बातें उन्होंने पहले भी की थीं, लेकिन तब अंतरराष्ट्रीय समुदाय और विशेष रूप से यूरोप ने उनकी बातों को हल्के में लिया था, लेकिन अब उनकी चिंता बढ़ रही है, क्योंकि ट्रंप डेनमार्क के इस स्वायत्तशासी क्षेत्र पर हर हाल में कब्जे के इरादे जता रहे हैं।

इस कारण सैन्य संगठन नाटो में शामिल कुछ यूरोपीय देश अपने सैनिकों को ग्रीनलैंड भेज रहे हैं। ग्रीनलैंड के साथ डेनमार्क के नेताओं ने स्पष्ट कर दिया है कि वे ट्रंप के इरादों को पूरा नहीं होने देंगे, लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति किसी की नहीं सुन रहे हैं। वे नाटो का अंत होने की डेनमार्क की चेतावनी का उपहास उड़ाकर कह रहे हैं कि यदि आज से पांच सौ साल पहले डेनमार्क की कोई नौका ग्रीनलैंड पहुंची तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह उसका हो गया।

ग्रीनलैंड का क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल का लगभग 70 प्रतिशत है। यह विश्व का सबसे बड़ा द्वीप है। यहां तेल, गैस और दुर्लभ खनिज के भंडार हैं। यहां की बर्फ पिघलने के कारण इन संसाधनों के दोहन की संभावनाएं बढ़ रही हैं। जाहिर है कि इन पर ट्रंप की भी निगाह है। इसके अलावा इस द्वीप का सामरिक महत्व भी है। चूंकि ग्रीनलैंड के साथ उसके आसपास की भी बर्फ पिघल रही है, इसलिए समुद्री रास्तों से वहां तक रूस और चीन की पहुंच आसान हो रही है। इसी कारण ट्रंप कह रहे हैं कि ग्रीनलैंड पर रूस और चीन की निगाह है।

हालांकि अतीत में भी अमेरिका के राष्ट्रपतियों ने ग्रीनलैंड को अपना हिस्सा बनाने की बातें की थीं, पर वे कभी इस दिशा आगे नहीं बढ़े। हां, एक समझौते के तहत 1951 में अमेरिका ने ग्रीनलैंड में अपना सैन्य अड्डा कायम कर लिया। यह अभी भी है। ट्रंप का तर्क है कि रूस और चीन का ग्रीनलैंड पर वर्चस्व कायम हो, इसके पहले अमेरिका को उसे अपना हिस्सा बना लेना चाहिए। रूस का कहना है कि ट्रंप अकारण यह कह रहे हैं कि वह ग्रीनलैंड पर कब्जा करना चाहता है। जो भी हो, आज यह नहीं कहा जा सकता कि रूस या फिर चीन अमेरिका को ग्रीनलैंड पर कब्जा करने से रोक सकेंगे। इसका कारण यह है कि यूरोपीय देश रूस की मदद लेने को तो बिल्कुल भी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि वह पहले से ही उनकी सुरक्षा के लिए खतरा बना हुआ है। यूक्रेन के खिलाफ रूस के युद्ध ने यूरोपीय देशों को सशंकित कर रखा है। ऐसे में यदि ट्रंप ग्रीनलैंड पर सच में कब्जा करने की दिशा में आगे बढ़ें तो हैरानी नहीं। डेनमार्क और यूरोपीय देशों के विरोध के बावजूद एक चिंताजनक तथ्य यह है कि अमेरिका में कई सांसद ट्रंप के इस विचार से सहमत हैं कि ग्रीनलैंड को वैसे ही अमेरिका का हिस्सा बनाना चाहिए, जैसे अलास्का को बनाया गया था। कहना कठिन है कि आगे क्या स्थितियां बनेंगी, लेकिन इसमें संदेह नहीं कि ग्रीनलैंड को लेकर ट्रंप के रवैये से यूरोप के साथ-साथ शेष विश्व भी चिंतित है। ट्रंप केवल ग्रीनलैंड में ही कब्जा करने के लिए उतावले नहीं दिख रहे हैं। वे ईरान में भी सैन्य हस्तक्षेप करने के संकेत दे रहे हैं। हालांकि पिछले दिनों उन्होंने यह कहा कि फिलहाल ईरान में दखल देने की जरूरत नहीं, लेकिन उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह किसी से छिपा नहीं की ईरान की कट्टरपंथी इस्लामी सत्ता उन्हें स्वीकार नहीं। वास्तव में अमेरिका को वह कोई भी देश रास नहीं आता, जो उसके इशारे पर न चले। अमेरिका ने इस आधार पर ईरान पर तमाम प्रतिबंध लगा रखे हैं कि वह परमाणु हथियार बनाने की कोशिश कर रहा है। इन प्रतिबंधों के कारण ही ईरान आर्थिक संकट से घिरा और उसके चलते वहां लोग सड़कों पर उतर आए। ईरानी सत्ता अपने लोगों की बात सुनने के बजाय उनकी आवाज सख्ती से दबा रही है। इसके चलते वहां सैकड़ों लोग मारे गए हैं। ट्रंप ईरान की उथल-पुथल का लाभ उठाने की कोशिश में दिखते हैं। वे कह रहे हैं कि ईरान के लोग अपना विरोध जारी रखें। ईरान के प्रति ट्रंप के आक्रामक रवैये पर रूस और चीन तो आपत्ति जता रहे हैं, लेकिन यूरोपीय देश ढुलमुल रवैया अपनाए हुए हैं। ट्रंप की ईरान के तेल भंडारों पर भी निगाह है और वे यह नहीं चाहते कि वह अपना तेल व्यापार डॉलर के अलावा अन्य मुद्राओं में करे और इस तरह डॉलर के प्रभुत्व को चुनौती दे। इसके चलते आशंका यही है कि ट्रंप मौका देखकर ईरान में लोकतंत्र बहाली की आड़ में वहां तख्तापलट की कोशिश कर सकते हैं। इसमें ईरान के आखिरी शाह के बेटे रजा पहलवी मददगार हो सकते हैं, जो निर्वासित होकर अमेरिका में रह रहे हैं।

# बेहतर विमर्श से जीवन संतोषजनक बनाएं

"बेहतर पोषण, शारीरिक व्यायाम, मानसिक सक्रियता बनाए रखने, बेहतर सामाजिक संबंधों व परिवार तथा समुदायों में वृद्ध व्यक्तियों को उचित महत्व व सम्मान देने के आधार पर वृद्धावस्था को कहीं अधिक स्वस्थ व संतोषजनक बनाया जा सकता है।

विश्वस्तर पर वृद्धों का जनसंख्या में प्रतिशत बढ़ रहा है और इसके साथ इस बारे में बेहतर विमर्श की जरूरत है कि उनका जीवन स्वस्थ व संतोषजनक कैसे बन सके। वर्ष 1950 में विश्व का कोई व्यक्ति औसतन 46 वर्ष जीता था तो वर्ष 2023 में यह आंकड़ा 70 वर्ष तक पहुंच गया। जापान, इटली व स्विट्जरलैंड जैसे कुछ देशों में आज औसत आयु ही 80 वर्ष के पार पहुंच चुकी है। वर्ष 2050 के लिए यह अनुमानित है कि 60 वर्ष से अधिक उम्र के विश्व में 210 करोड़ लोग होंगे व विश्व की जनसंख्या में उनका हिस्सा 21 प्रतिशत होगा। ऐसे में जरूरी है कि वृद्धावस्था को स्वस्थ व संतोषजनक बनाने के लिए बेहतर प्रयास किए जाएं। इस सोच से प्रेरित होकर विश्व स्तर पर वर्ष 2021-2030 के दशक को स्वस्थ वृद्धावस्था के दशक के रूप में मनाया जा रहा है।

हालांकि वृद्धावस्था को अधिक रोगों व स्वास्थ्य समस्याओं के रूप में देखा गया है, पर हाल के समय में इस ओर अधिक महत्व दिया गया है कि समुचित सावधानियां बरत कर, अनुकूल स्थितियां उत्पन्न कर इन रोगों व स्वास्थ्य समस्याओं को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इस तरह वृद्धावस्था को अधिक संतोषजनक व रचनात्मक बनाया जा सकता है। जहां रोग का इलाज जरूरी है वहां यह और भी महत्वपूर्ण है कि नीतिगत व व्यक्तिगत स्तर पर बेहतर कदम उठाकर इन रोगों की संभावना को ही अपेक्षाकृत कहीं कम किया जा सकता है। जहां दुर्घटना होने पर चोट के इलाज की व्यवस्था जरूरी है, वहां यह भी सच है कि कुछ सावधानियां अपना कर चोट लगने की संभावना को ही काफी हद तक कम किया जा सकता है।

यदि भारत की स्थिति देखें तो वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की संख्या 10.3 करोड़ थी व उसका भारत की इस समय की जनसंख्या में



8.6 प्रतिशत का हिस्सा था। वर्ष 2050 के लिए सरकारी स्तर पर अनुमान है कि तब तक 60 वर्ष से अधिक की आयु की जनसंख्या बढ़कर 31.9 करोड़ तक पहुंच जाएगी। यह उस समय की भारतीय जनसंख्या का 19.5 प्रतिशत होगा।

अब यदि हम अधिक वृद्ध व्यक्तियों यानी 75 वर्ष की आयु से अधिक के व्यक्तियों की बात करें तो वर्ष 2011 और वर्ष 2050 के बीच इनकी संभावित वृद्धि की दर और भी अधिक है। सरकारी स्तर का अनुमान है कि इस दौर में कुल जनसंख्या में इनके हिस्से में 340 प्रतिशत की वृद्धि होगी।

इन स्थितियों को देखते हुए यह विमर्श और जरूरी हो जाता है कि उपलब्ध बजट व अन्य सीमाओं के बीच वृद्धावस्था को अधिक स्वस्थ व संतोषजनक कैसे बनाया जाए। निश्चय ही सभी वृद्ध लोगों तक समुचित पेंशन पहुंचाना बहुत जरूरी है। इसके साथ उनके स्वस्थ जीवन के लिए अनेक अन्य कदम उठाना भी आवश्यक है।

जहां बीमारियों का इलाज व इसकी व्यवस्था आवश्यक है, वहां इससे भी अधिक जरूरी व लाभदायक है कि ऐसी नीतियों व कार्यक्रमों को अपनाया जाए जिनके आधार पर इन बीमारियों की संभावना को अपेक्षाकृत कहीं कम किया जा सके। बेहतर पोषण, शारीरिक व्यायाम, मानसिक सक्रियता बनाए रखने, बेहतर सामाजिक संबंधों व परिवार तथा समुदायों में वृद्ध व्यक्तियों को उचित महत्व व सम्मान देने के आधार पर वृद्धावस्था को कहीं अधिक स्वस्थ व संतोषजनक बनाया जा सकता है।

दक्षिण राजस्थान में 'प्रबल यात्रा' कार्यक्रम को इसी सोच के आधार पर तैयार किया गया है व इसे अर्थ संस्था द्वारा लगभग 100 गांवों में क्रियान्वित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आने वाले गांवों में वृद्ध नागरिकों को प्रबल यात्रा मंच के सदस्य के रूप में एक मंच पर लाया जाता है व वे हर महीने अपने गांव की एक सामूहिक मीटिंग में मिलते हैं व अपने विभिन्न सरोकारों, मुद्दों, समस्याओं व जीवन के अनुभवों की चर्चा करते हैं। इस आधार पर वे आगे भी ऐसी अगली मीटिंग होने तक, आपस में बेहतर विमर्श कर सकते हैं।

ऐसी सामूहिक वार्ता में ऐसे पोषण सुधार की चर्चा होती है जो मौजूदा स्थितियों में वृद्ध लोगों के लिए संभव है। यदि दांत कमजोर होने के कारण कोई कोमल रूप में उपलब्ध खाद्य की जानकारी है, तो उसे एक-दूसरे से बांटा जा सकता है। प्रबल यात्रा कार्यक्रम ने सब्जियों के अधिक उपयोग व घर के पास सब्जी उगाने के लिए सहायता देने को महत्व दिया है।

इस वार्ता में ऐसे साधारण व्यायाम के बारे में चर्चा व अभ्यास भी होता है, जो वृद्ध व्यक्ति आसानी से अपना सकते हैं। परस्पर मिल कर वृद्ध व्यक्ति ऐसे कुछ खेल भी खेलते हैं जिनसे मानसिक सक्रियता बनी रहे या इसमें सुधार हो। विभिन्न परिवारों के सहयोग से उनके घर व आसपास के क्षेत्र का ऐसा आकलन किया जाता है जिससे वृद्ध या अन्य व्यक्तियों के गिरने या दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना को कम किया जा सकता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जरूरतमंद वृद्ध गांववासियों को चश्मा प्राप्त करने, मोतियाबिंद का आप्रेशन करवाने में मदद की जाती है व चलने में सहायता के लिए छड़ी व वॉकर भी निःशुल्क उपलब्ध करवाए जाते हैं। वृद्ध व्यक्तियों को अस्पताल में जरूरी इलाज करवाने के लिए समुचित सहायता दी जाती है।

अनेक वृद्ध व्यक्तियों को नियमित पेंशन व राशन मिल रहे हैं पर यदि किसी को यह सरकारी सुविधाएं प्राप्त करने में कठिनाई होती है तो इस कार्यक्रम की ओर से उसे सहायता दी जाती है। अन्य सरकारी कार्यक्रमों का लाभ प्राप्त करने में भी सहायता की जाती है। इस तरह वृद्ध व्यक्तियों के कई तनाव कम हो जाते हैं व उन्हें यह आश्वासन रहता है कि जरूरत पड़ने पर यहां से सहायता मिल सकती है।

## प्रेरणा

### देह की अनसुनी आवाज़ : छठी इंद्रिय और भीतर छिपा जीवन-संवाद

क्या मनुष्य के भीतर कोई ऐसी इंद्रिय भी काम करती है, जिसे हम देख नहीं पाते, छू नहीं पाते, पर जो हर क्षण हमें जीवित रखने का दायित्व निभाती है? विज्ञान अब जिस दिशा में कदम बढ़ा रहा है, वह इसी अनदेखी शक्ति की खोज है। हमारी हर सांस, हर धड़कन, भूख का एहसास, प्यास की बेचैनी या अचानक उमड़ आने वाली घबराहट—ये सब केवल जैविक क्रियाएं नहीं, बल्कि मस्तिष्क और शरीर के बीच चलने वाला एक गुप्त संवाद हैं। वैज्ञानिक इस अदृश्य संवाद को ही 'अंतःसंवेदना' या इंटेरोसेप्शन कह रहे हैं, जिसे आम भाषा में शरीर की छठी इंद्रिय भी कहा जा सकता है। मनुष्य सदियों से पांच इंद्रियों—दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, स्वाद और गंध—को ही दुनिया समझने का आधार मानता आया है। लेकिन शरीर के भीतर घटने वाली प्रक्रियाओं को समझने वाली एक अलग प्रणाली लगातार काम करती रहती है। यह हमें बताती है कि कब पेट खाली है, कब हृदय गति तेज हो रही है, कब शरीर को आराम चाहिए। हम इन संकेतों पर बिना सोचे प्रतिक्रिया देते हैं, पर इनके पीछे मौजूद तंत्र को कभी महसूस नहीं कर पाते। यही अनदेखा तंत्र अब आधुनिक तंत्रिका विज्ञान के केंद्र में आ गया है।

अमेरिका के स्क्रिप्स रिसर्च इंस्टीट्यूट और एलन इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने इस दिशा में ऐतिहासिक पहल शुरू की है। उनका लक्ष्य शरीर के भीतर फैले तंत्रिका जाल का पहला विस्तृत एटलस तैयार करना है। यह एटलस बताएगा कि मस्तिष्क किस तरह हृदय, आंत, फेफड़े, प्रतिरक्षा तंत्र और हार्मोन प्रणाली से लगातार संवाद करता है। यह परियोजना केवल शारीरिक संरचना का नक्शा नहीं, बल्कि उस भाषा को समझने की कोशिश है, जिसमें देह स्वयं से बात करती है।

नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक डॉ. आर्देम पटापूटियन इस अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं। उनका मानना है कि अंतःसंवेदना को समझे बिना आधुनिक चिकित्सा अधूरी है। कई जटिल बीमारियां—जैसे ऑटोइम्यून विकार, पुराने दर्द, उच्च रक्तचाप, अवसाद और स्नायु रोग—इसी आंतरिक संचार के टूटने से जन्म लेती हैं। यदि इस संवाद की लय को समझ लिया जाए तो उपचार के बिल्कुल नए रास्ते खुल सकते हैं।

अंतःसंवेदना का सबसे रोचक पक्ष यह है कि यह पूरी तरह अचेतन स्तर पर काम करती है। हमें यह सिखाना नहीं पड़ता कि भूख लगने पर खाना है या सांस फूलने पर रुकना है। शरीर स्वयं निर्णय लेता है और मस्तिष्क उन निर्णयों को अर्थ देता है। भावनाओं की दुनिया भी इसी से जुड़ी है। डर लगने पर दिल का तेज धड़कना, तनाव में पेट का सिकुड़ना, खुशी में शरीर का हल्का हो जाना—ये सब इसी छठी इंद्रिय के रूप हैं।

वैज्ञानिकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती इन संकेतों को दर्ज करना है। हृदय या आंत से आने वाली तंत्रिकाएं इतनी सूक्ष्म और बिखरी हुई होती हैं कि उन्हें अलग पहचानना कठिन होता है। अब उन्नत 3डी इमेजिंग और आनुवंशिक प्रोफाइलिंग की मदद से इन मार्गों को चिन्हित करने का प्रयास हो रहा है। शोध के पहले चरण में तंत्रिका कोशिकाओं को विशेष तरीके से लेबल कर यह देखा जाएगा कि वे रीढ़ की हड्डी से निकलकर किन अंगों तक पहुंचती हैं। दूसरे चरण में यह समझा जाएगा कि अलग-अलग अंगों से आने वाले संकेत किस प्रकार के होते हैं।

यह काम केवल प्रयोगशाला तक सीमित नहीं है। इसका सीधा संबंध रोजमर्रा के जीवन से है। जब कोई व्यक्ति लगातार थकान महसूस करता है, बिना कारण घबराहट होती है या पेट से जुड़ी परेशानियां मानसिक तनाव में बदल जाती हैं, तब असल में अंतःसंवेदना ही गड़बड़ा रही होती है। यदि इस प्रणाली को साध लिया जाए तो दवाओं के साथ-साथ व्यवहारिक और मानसिक उपचारों की नई विधियां विकसित हो सकती हैं।

स्क्रिप्स इंस्टीट्यूट के प्रोफेसर डॉ. ली ये का कहना है कि यह शोध मानव देह को देखने का नजरिया बदल देगा। अब तक चिकित्सा विज्ञान अंगों को अलग-अलग इकाइयों की तरह देखता रहा, पर अंतःसंवेदना बताती है कि शरीर एक अखंड नेटवर्क है। हृदय की धड़कन का संबंध आंत की गतिविधि से, आंत का संबंध भावनाओं से और भावनाओं का संबंध प्रतिरक्षा से जुड़ा है। इस जाल को समझना ही भविष्य की चिकित्सा की कुंजी है।

अमेरिका के नेशनल इंस्टीट्यूट्स ऑफ हेल्थ ने इस परियोजना के लिए पांच वर्षों में 1.42 करोड़ डॉलर की सहायता देने का वादा किया है। यह निवेश बताता है कि दुनिया अब बीमारियों को केवल बाहरी लक्षणों से नहीं, बल्कि भीतर के संवाद से समझना चाहती है। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि आने वाले दशक में मधुमेह, मोटापा, अवसाद और हृदय रोगों के इलाज की परिभाषा बदल जाएगी।

अंतःसंवेदना हमें यह भी सिखाती है कि मन और शरीर अलग-अलग नहीं हैं। जब कोई व्यक्ति ध्यान या योग करता है, तब वह अनजाने में इसी छठी इंद्रिय को साध रहा होता है। गहरी सांस लेने से हृदय गति शांत होती है, मन स्थिर होता है—यह मस्तिष्क और अंगों के बीच संवाद के संतुलित होने का प्रमाण है। शायद प्राचीन परंपराओं ने जिसे अंतर्ज्ञान कहा, विज्ञान आज उसे नए शब्दों में खोज रहा है। इस शोध का दार्शनिक पक्ष भी कम महत्वपूर्ण नहीं। मनुष्य स्वयं को बाहर की दुनिया से परिभाषित करता है, पर असली ब्रह्मांड उसके भीतर धड़क रहा है। हर कोशिका एक संदेश भेजती है, हर अंग एक कहानी कहता है। हम उन कहानियों को सुनना भूल गए हैं। तंत्रिका एटलस का निर्माण दरअसल उसी भूली हुई भाषा को दोबारा पढ़ने का प्रयास है।

कल्पना कीजिए, यदि डॉक्टर भविष्य में किसी मरीज की बीमारी केवल खून की जांच से नहीं, बल्कि उसके आंतरिक संकेतों के नक्शे से पहचान सकें। यदि अवसाद का इलाज केवल दवा से नहीं, बल्कि शरीर-मस्तिष्क संवाद को ठीक करके हो सके। यदि दर्द को दबाने के बजाय उसके मूल संदेश को समझा जाए—तो चिकित्सा का स्वरूप कितना मानवीय हो जाएगा।

शोधकर्ता मानते हैं कि यह यात्रा लंबी है, पर दिशा स्पष्ट है। जिस तरह कभी मानव जीनोम का नक्शा बनना असंभव लगता था, उसी तरह आज अंतःसंवेदना का एटलस चुनौतीपूर्ण दिख रहा है। लेकिन हर नई खोज पहले असंभव ही लगती है। यह परियोजना आने वाली पीढ़ियों के लिए वैसा ही आधार बनेगी, जैसा जीनोम प्रोजेक्ट ने बनाया था।

## टकराव की ओर अमेरिका-यूरोप, ग्रीनलैंड को लेकर जिद पर अड़े ट्रंप

वेनेजुएला पर हमला करके उसके राष्ट्रपति मादुरो को पत्नी समेत अगवा करा लेने के बाद से राष्ट्रपति ट्रंप ने डेनमार्क के स्वायत्त द्वीप ग्रीनलैंड को छीनने की मुहिम तेज कर रखी है। ग्रीनलैंड दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप है जो कनाडा और यूरोप के बीच उत्तरी अटलांटिक महासागर में फैला है। उत्तरी ध्रुव से सटा होने के कारण तटवर्ती पट्टियों को छोड़कर इसका 80 प्रतिशत से अधिक भूभाग बर्फ की एक से तीन किमी मोटी परत से ढका रहता है। दक्षिणी ध्रुव के बाद सबसे अधिक बर्फ ग्रीनलैंड की इस परत में ही जमा है जो जलवायु परिवर्तन के कारण तेजी से पिघल कर किनारों की तरफ खिसक रही है।

ग्रीनलैंड के साथ-साथ उत्तरी ध्रुव सागर की बर्फ भी तेजी से पिघल रही है जिसकी वजह से समुद्री यातायात के नए जलमार्ग खुल रहे हैं जो रूस, चीन और जापान से उत्तरी अमेरिका और यूरोप की दूरी को बहुत कम कर देते हैं। उत्तरी ध्रुव सागर से ग्रीनलैंड सागर होते हुए उत्तरी अटलांटिक महासागर में खुलने वाले इन मार्गों का प्रयोग करने के लिए रूस और चीन अपने विशेष युद्धपोतों और पनडुब्बियों का विकास कर रहे हैं ताकि वहां अपना वर्चस्व कायम कर सकें। इस जलमार्ग पर स्थित होने के कारण ग्रीनलैंड का भूराजनीतिक और सामरिक महत्व हमेशा से रहा है।

दूसरे महायुद्ध में उसने हिटलर के युद्धपोतों और पनडुब्बियों को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। युद्ध के बाद राष्ट्रपति ट्रूमैन ने इसे 10 करोड़ डॉलर के सोने से खरीदने का प्रयास किया, पर बात नहीं बनी। उसके बाद 1951 में डेनमार्क ने अमेरिका को ग्रीनलैंड की रक्षा में विशेष भूमिका देते हुए सैनिक अड्डे बनाने का अधिकार दे दिया था। इसके अलावा ग्रीनलैंड में तेल, गैस और उन दुर्लभ खनिजों के भंडार भी हैं जो इलेक्ट्रॉनिक और रक्षा उपकरणों और स्वच्छ ऊर्जा की बैटरियों के लिए आवश्यक होते हैं।

राष्ट्रपति ट्रंप का कहना है कि उत्तरी ध्रुव और उत्तरी अटलांटिक महासागर में रूस और चीन के बढ़ते खतरे को देखते हुए ग्रीनलैंड पर अमेरिका का स्वामित्व होना आवश्यक है। इसके बिना न ग्रीनलैंड अपनी रक्षा कर पाएगा और न वे उसकी रक्षा कर सकेंगे। इसलिए सीधे या टेढ़े रास्ते से वे उसे लेकर रहेंगे। उन्होंने भी ग्रीनलैंड को खरीदने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन डेनमार्क और ग्रीनलैंड ने कहा उनका देश बिकाऊ नहीं है। डेनमार्क अमेरिका का दो सौ साल पुराना दोस्त है और स्थापना के समय से ही नाटो का सदस्य रहा है।

उसने कोई 300 वर्ष पहले ग्रीनलैंड को अपना उपनिवेश बनाया था, परंतु 1979 के बाद से ग्रीनलैंड पूरी तरह स्वायत्त है। केवल विदेश नीति और रक्षा डेनमार्क संभालता है, क्योंकि ग्रीनलैंड के पास अपनी सेना नहीं है। उसके सभी 56 हजार इन्युइट आदिवासियों को डेनिश नागरिकता प्राप्त है। ग्रीनलैंड के प्रधानमंत्री जेंस-फ्रेडरिक नील्सन का कहना है कि यदि उन्हें अमेरिका और डेनमार्क में से एक को चुनना पड़ा तो वे डेनमार्क में रहना पसंद करेंगे।

संयुक्त राष्ट्र चार्टर या कोई भी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था किसी भी महाशक्ति को किसी दूसरे देश की संप्रभुता जबरन छीनने का अधिकार नहीं देती, लेकिन हाल के एक इंटरव्यू में ट्रंप ने कहा, 'उन्हें अंतरराष्ट्रीय कानून की जरूरत नहीं है।' सवाल यह है कि यदि ट्रंप सहयोग करने और सुविधाएं देने के लिए तैयार एक संप्रभु मित्र देश को अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जबरन हथियाना आवश्यक और वैध मानते हैं तो उनमें और पुतिन में क्या फर्क है? बल्कि पुतिन तो उनकी तुलना में नेक काम कर रहे हैं, क्योंकि उनके शब्दों में, उनकी सैनिक कार्रवाई तो 'यूक्रेन से नात्सीवादी ताकतों का सफाया कर नाटो की बढ़त को रोकने के लिए है।'

ट्रंप की दलील के आधार पर चीन का ताइवान पर कब्जा कर लेना तो और भी जायज माना जाएगा, क्योंकि शी चिनफिंग तो अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए टूट कर अलग हुए देश और समाज के हिस्से को जोड़ने का कार्य करेंगे। दूसरे महायुद्ध के बाद एक नियमबद्ध व्यवस्था की स्थापना करके राष्ट्रीय संप्रभुता, लोकतंत्र और मुक्त व्यापार की हिमायत करते आ रहे देश के राष्ट्रपति का अंतरराष्ट्रीय कानून का इस तरह मखौल उड़ाना विश्व व्यवस्था के लिए गंभीर संकट का संकेत है। इस स्थिति के लिए काफी हद तक यूरोपीय संघ और अमेरिका से इतर नाटो के देश खुद जिम्मेदार हैं।

ट्रंप और उनकी सरकार के आपत्तिजनक बयानों का एक सुर में कड़ा विरोध करने और ग्रीनलैंड की रक्षा के लिए नाटो सेनाओं को तैनात करने के बजाय वे उसी तरह की जी हुजूरी में लगे हुए हैं, जैसी ट्रंप के मनमाने टैरिफों के एलान पर की थी। यूक्रेन पर रूसी हमले की कड़ी निंदा से बचने के लिए भारत और चीन जैसी दक्षिणी गोलार्ध की प्रमुख शक्तियों की निंदा करने वाले यूरोपीय देशों ने वेनेजुएला पर ट्रंप के हमले पर जैसी बगलें झांकीं, उससे भी उनकी खासी फजीहत हो रही है।

अब जब ग्रीनलैंड और डेनमार्क की संप्रभुता को लेकर पानी सिर से ऊपर जा चुका है तब भी डेनमार्क के साथ केवल ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस जैसे चंद देशों ने ही अपनी टुकड़ियां ग्रीनलैंड भेजी हैं। इन मुट्ठी भर देशों की हिम्मत तोड़ना ट्रंप के लिए बाएं हाथ का खेल है। उन्होंने दबाव बढ़ाने के लिए यूरोप के आठ देशों पर 10 प्रतिशत टैरिफ लगाने का एलान कर दिया है और उसे 25 प्रतिशत तक बढ़ाने की धमकी दी है। इस पर नाटो और यूरोपीय संघ की प्रतिक्रिया नाराजगी भरी है, लेकिन यह पता नहीं कि ट्रंप से टक्कर लेने के मामले में वे कितने पानी में हैं।

नाटो की एक समस्या यह है कि एक पर हमला सभी पर हमले का सिद्धांत नाटो के ही किसी सदस्य पर दूसरे सदस्य के हमले की स्थिति में स्पष्ट नहीं है। मिसाल के तौर पर 1974 में साइप्रस द्वीप पर फैली हिंसा में जब नाटो सदस्य तुर्किये ने दूसरे नाटो सदस्य ग्रीस पर हमला बोल दिया था तब नाटो के समक्ष धर्मसंकट खड़ा हो गया था कि किसका पक्ष ले। अंत में अमेरिका ने बीच-बचाव कर सुलह कराई थी। ट्रंप के ग्रीनलैंड पर कब्जा कर लेने से और भी गंभीर संकट खड़ा हो सकता है, जिसके लिए नाटो अभी तैयार नजर नहीं आता।

## अभियान

### घटस्थापना के समय करें इन दिव्य मंत्रों का जप, खुशियों से भर जाएगा घर-संसार

भारत में नवरात्र का त्योहार अपने धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता है। यह केवल नौ दिनों तक चलने वाला उत्सव नहीं है, बल्कि यह देवी शक्ति की उपासना और मनुष्य के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा, सुख-समृद्धि और मानसिक शांति लाने का एक माध्यम है। खासतौर पर गुप्त नवरात्र, जो माघ माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तिथि तक मनाया जाता है, साधकों के लिए अत्यधिक शुभ और फलदायी माना जाता है। इस साल गुप्त नवरात्र 19 जनवरी से 27 जनवरी 2026 तक मनाया जाएगा। गुप्त नवरात्र का यह पर्व अपने आप में विशेष है, क्योंकि यह सामान्य नवरात्र से भिन्न होता है और इसे विशेष रूप से दस महाविद्याओं की उपासना के लिए समर्पित किया जाता है।

घटस्थापना नवरात्र की शुरुआत का प्रतीक है। इस दिन घर में देवी शक्ति का आवाहन करने के लिए मिट्टी या तांबे के पात्र में गंगा जल या स्वच्छ जल से 'घट' स्थापना की जाती है। घटस्थापना का अर्थ केवल घर में एक पवित्र पात्र रखना नहीं है, बल्कि यह प्रतीकात्मक रूप से आपके घर में सकारात्मक ऊर्जा, समृद्धि और देवी शक्ति को आमंत्रित करने का माध्यम है। इस दिन 'घट' में पानी, हल्दी, कुमकुम, चावल, फूल, इत्र और विशेष प्रकार के बीज या पंचामृत का प्रयोग किया जाता है। घटस्थापना करते समय पूरे घर में पवित्रता का वातावरण बना रहता है और साधक को मानसिक शांति का अनुभव होता है। गुप्त नवरात्र में दस महाविद्याओं की पूजा की जाती है। इन देवी रूपों में प्रत्येक रूप विशेष शक्ति और आध्यात्मिक गुणों का प्रतीक है। साधक यदि पूरे विश्वास और श्रद्धा के साथ इन देवी रूपों की पूजा और मंत्रों का जप करता है, तो उसके जीवन में हर प्रकार की बाधा दूर होती है। इसके साथ ही घर में सुख, शांति, समृद्धि और मानसिक संतुलन का वातावरण बनता है। विशेष मान्यता है कि गुप्त नवरात्र में देवी मां दुर्गा की भक्ति करने से न केवल सांसारिक इच्छाएं पूरी होती हैं, बल्कि साधक को मानसिक और आध्यात्मिक रूप से भी सशक्त बनाया जाता है।

घटस्थापना के समय सबसे महत्वपूर्ण पहलू है मंत्रों का जप। मंत्र उच्चारण की शक्ति और निष्ठा साधक के मन, शरीर और वातावरण को दिव्यता से भर देती है। सबसे पहले, 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' मंत्र का जप करने की परंपरा है। इसे दस महाविद्याओं में से शक्ति का संपूर्ण प्रतिनिधित्व माना जाता है। साधक यदि कम से कम 108 बार इस मंत्र का जप करता है, तो उसे मानसिक स्थिरता, आत्मविश्वास और जीवन में सकारात्मक बदलाव देखने को मिलते हैं। इस मंत्र का उच्चारण करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और नकारात्मक शक्तियां दूर रहती हैं। इसके अलावा 'ॐ दुं दुर्गायै नमः' मंत्र का जप भी अत्यंत शुभ माना गया है। यह मंत्र साधक के जीवन में न केवल सुरक्षा की भावना उत्पन्न करता है, बल्कि किसी भी प्रकार की भय या संकट को दूर करने की शक्ति भी देता है। गुप्त नवरात्र में यह मंत्र जप करना विशेष लाभकारी माना जाता है। मान्यता है कि माता के इस रूप की उपासना से साधक मानसिक शांति, शक्ति और स्थिरता प्राप्त करता है।

गुप्त नवरात्र में 'ॐ क्लीं कालिकायै नमः' मंत्र का जप करना भी अत्यंत लाभकारी है। देवी काली शक्ति, संकल्प और साहस की प्रतीक हैं। यह मंत्र साधक को कठिन परिस्थितियों में साहस, आत्मबल और विवेक प्रदान करता है। घर में इस मंत्र का उच्चारण करने से परिवार में एकता, प्रेम और सुख-शांति बनी रहती है। साथ ही, यह पारिवारिक सदस्यों में समझ, सहिष्णुता और सहयोग की भावना भी विकसित करता है।

साधक अपने ध्यान और विश्वास के साथ 'ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः' मंत्र का जप भी कर सकते हैं। देवी लक्ष्मी धन, समृद्धि और खुशहाली की प्रतीक हैं। गुप्त नवरात्र में इसका जप करने से घर में आर्थिक स्थिरता, व्यापार में सफलता और जीवन में समृद्धि आती है। विशेषकर उन परिवारों के लिए यह मंत्र अत्यंत लाभकारी है, जिनके घर में धन-संपत्ति और सुख-शांति की कमी अनुभव होती है।

मंत्र जप के साथ-साथ गुप्त नवरात्र में साधक को दस महाविद्याओं की प्रतिमाओं या चित्रों की स्थापना और पूजा भी करनी चाहिए। प्रत्येक दिन देवी के एक रूप की विशेष पूजा और मंत्र जप करने से साधक को उस देवी की शक्ति प्राप्त होती है। प्रतिदिन की पूजा के दौरान फूल, दीप, अगरबत्ती, फल और नैवेद्य अर्पित करना अनिवार्य है। इस प्रकार की विधिपूर्वक पूजा से न केवल देवी की कृपा प्राप्त होती है, बल्कि परिवार में आपसी प्रेम, सहयोग और सौहार्द्र भी बढ़ता है।

गुप्त नवरात्र में साधक को शुद्धता और संयम का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस अवधि में सात्विक भोजन, ब्रह्मचर्य का पालन और सकारात्मक सोच का अभ्यास अत्यंत आवश्यक है। दिन में कम से कम एक बार ध्यान और प्राणायाम करना मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होता है। यह साधक की ऊर्जा को शुद्ध करता है और मंत्रों की शक्ति को बढ़ाता है।

अत्यंत शुभ मुहूर्त पर घटस्थापना करने से मंत्रों का प्रभाव और भी गहरा होता है। इस वर्ष 2026 में घटस्थापना का शुभ मुहूर्त प्रातः 07:12 बजे से 09:45 बजे तक है। इस समय में स्थापित घट में जल, चावल, हल्दी, कुमकुम और पुष्प डालकर देवी शक्ति का आवाहन किया जाता है। घटस्थापना के बाद प्रतिदिन घट में जल को बदलना और उसमें ताजे पुष्प डालना लाभकारी माना जाता है।

गुप्त नवरात्र के दौरान प्रत्येक दिन की पूजा में निम्नलिखित मंत्रों का जप करना अत्यंत शुभ है:

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' – देवी चामुण्डा के लिए

'ॐ दुं दुर्गायै नमः' – देवी दुर्गा के लिए

'ॐ क्लीं कालिकायै नमः' – देवी काली के लिए

'ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः' – देवी लक्ष्मी के लिए

'ॐ ऐं नमः' – शक्ति और समर्पण के लिए

इन मंत्रों का जप श्रद्धा, भक्ति और नियमितता के साथ करने से घर में सुख-शांति, धन-समृद्धि और मानसिक स्थिरता आती है। गुप्त नवरात्र की विशेषता यह है कि साधक बिना किसी बाहरी दिखावे के केवल अपनी श्रद्धा और भक्ति से देवी को प्रसन्न कर सकता है। इसका परिणाम केवल सांसारिक लाभ ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति भी होता है।

गुप्त नवरात्र की समाप्ति पर नवमी तिथि को देवी महाविद्या की विशेष पूजा और आरती करना अत्यंत लाभकारी माना जाता है। इस दिन विशेष रूप से दीप प्रज्वलन, मंत्र जप और देवी को प्रसाद अर्पित करना शुभ माना गया है। नवमी के दिन की पूजा से साधक को देवी की पूर्ण कृपा प्राप्त होती है और घर में सुख-समृद्धि बनी रहती है।

धार्मिक मान्यता है कि गुप्त नवरात्र में विधिपूर्वक पूजा करने वाले साधक के जीवन में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं आती। परिवार में प्रेम, सहयोग और सद्भावना बनी रहती है। यह समय मानसिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करने का भी है। साधक इस दौरान अपनी आंतरिक शक्तियों को जागृत कर सकता है और देवी की शक्ति से आत्मबल और साहस प्राप्त कर सकता है।

इस प्रकार, गुप्त नवरात्र न केवल धार्मिक अनुष्ठान का पर्व है, बल्कि यह हमारे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा, मानसिक शांति और समृद्धि लाने का माध्यम भी है। घटस्थापना के समय मंत्रों का जप, सात्विक भोजन, संयम और ध्यान का पालन करने से घर और परिवार दोनों में दिव्यता और खुशहाली आती है। साधक अपनी निष्ठा और विश्वास के साथ देवी की उपासना करता है, तो देवी उसकी हर मनोकामना पूरी करती हैं।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

# मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का गुजरात टेक्सटाइल पॉलिसी-2024 के अंतर्गत अहम निर्णय

**(जीएनएस)।** गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने टेक्सटाइल पॉलिसी-2024 के तहत पहली बार ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के सशक्तिकरण एवं उनकी आय में वृद्धि का दृष्टिकोण अपनाया है।

मुख्यमंत्री ने महिला सशक्तिकरण के इस दृष्टिकोण को अधिक व्यापक बनाने के लिए टेक्सटाइल पॉलिसी के कुछ प्रावधानों में महत्वपूर्ण सुधार करने के निर्देश दिए हैं।

तदनुसार, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन और राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन में पंजीकृत या अन्य ऐसे स्वैच्छिक स्वयं सहायता समूह, जिसमें आजीविका के समान उद्देश्य से जुड़ीं महिलाओं के एक या एक से अधिक स्वयं सहायता समूह शामिल हैं, को टेक्सटाइल पॉलिसी के अंतर्गत लाभ मिल पाएगा।

मुख्यमंत्री ने एक अन्य निर्णय यह भी किया है कि राज्य में म्युनिसिपल क्षेत्र की सीमा के अंदर स्थित गारमेंट, अपैरल और मेडअप्स, स्टिचिंग, एंब्रॉयडरी तथा अन्य गतिविधियों से जुड़ी गैर-प्रदूषणकारी टेक्सटाइल मैन्युफैक्चरिंग गतिविधियों वाली इकाइयों को भी इस टेक्सटाइल पॉलिसी-2024 का लाभ दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने टेक्सटाइल पॉलिसी-2024 के अंतर्गत राज्य की अर्थव्यवस्था और देश की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कपड़ा उद्योग की टेक्सटाइल वैल्यू चेन के हरेक सेगमेंट का विश्लेषण करके गारमेंट और अपैरल तथा टेक्निकल टेक्सटाइल पर विशेष ध्यान केंद्रित करने की रणनीति अपनाई है।

इसके अंतर्गत, गारमेंट, अपैरल और मेडअप्स, स्टिचिंग तथा एंब्रॉयडरी जैसी गैर-प्रदूषणकारी गतिविधियों के अलावा अन्य मूल्य वर्धित गतिविधियों वाली इकाइयां, जो गुजरात प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (जीपीसीबी) की मौजूदा वाइट कैटेगरी और ग्रीन कैटेगरी या उसके समकक्ष जीपीसीबी के वर्तमान प्रावधान/कैटेगरी क्लासिफिकेशन के तहत शामिल हैं, साथ ही जो महानगर पालिका क्षेत्र की सीमा के भीतर स्थापित हैं, उन्हें भी गुजरात टेक्सटाइल पॉलिसी-2024 के अंतर्गत सहायता के लिए पात्र माना जाएगा।

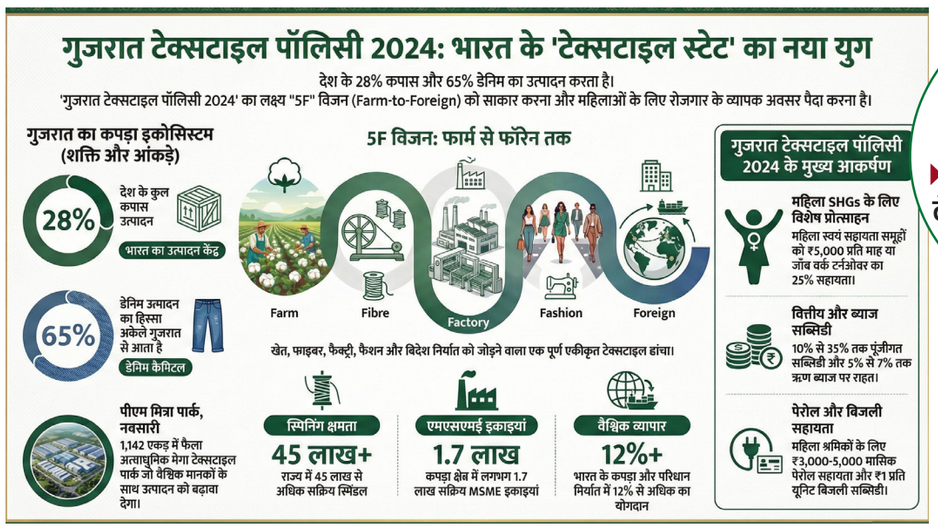


**महिला स्वयं सहायता समूहों के सशक्तिकरण के दृष्टिकोण को अधिक व्यापक बनाया जाएगा**

**मनपा क्षेत्र में स्थित गैर-प्रदूषणकारी टेक्सटाइल मैन्युफैक्चरिंग गतिविधियों वाली इकाइयों को मिलेगा पॉलिसी का लाभ**

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के इस निर्णय से राज्य के महानगर पालिका क्षेत्र की सीमा के भीतर स्थित गैर-प्रदूषणकारी टेक्सटाइल इकाइयों को योजना का काफी लाभ मिलेगा।

इतना ही नहीं, शहरी क्षेत्र में रोजगार सृजन को बढ़ावा मिलेगा तथा कुशल एवं अर्धकुशल कामगारों के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

गैर-प्रदूषणकारी टेक्सटाइल गतिविधियों को शहरी क्षेत्र में मान्यता मिलने से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के विकास के लिए भी अनुकूल वातावरण मिलेगा।

इसके अलावा, मनपा क्षेत्र में उपलब्ध इंफ्रास्ट्रक्चर सुविधाओं का प्रभावी उपयोग होगा, जिससे उत्पादन लागत में कमी आएगी और प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रोत्साहन मिलेगा।

शहरी क्षेत्रों में गारमेंट, अपैरल, स्टिचिंग और एंब्रॉयडरी जैसी लेबर-इंटेंसिव (बड़े पैमाने पर श्रम की खपत) तथा गैर-प्रदूषणकारी टेक्सटाइल गतिविधियां होने से महिला कर्मचारियों को स्थानीय स्तर पर ही रोजगार के और अधिक अवसर उपलब्ध होंगे, जिसके परिणामस्वरूप उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिरता बढ़ेगी और वर्क-लाइफ बैलेंस यानी कार्य-जीवन संतुलन को बनाए रखने में मदद मिलेगी।

इसके अलावा, गैर-प्रदूषणकारी गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलने से पर्यावरण सुरक्षा तथा संतुलित एवं टिकाऊ औद्योगिक विकास के उद्देश्य भी पूरे हो सकेंगे।

गुजरात टेक्सटाइल पॉलिसी-2024 के अंतर्गत पात्र स्वयं सहायता समूहों को मिलने वाले लाभों के अतिरिक्त मुख्यमंत्री के इस निर्णय के फलस्वरूप राज्य की महिलाएं आर्थिक रूप से और भी सशक्त एवं आत्मनिर्भर बन सकेंगी।

इस प्रकार के कदम उन्हें अधिक अवसर और सशक्तता प्रदान करेंगे, ताकि वे समाज, अर्थव्यवस्था और व्यवसाय के क्षेत्र में और भी मजबूत बन सकें।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री सह उद्योग मंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में गुजरात टेक्सटाइल पॉलिसी-2024 में किए गए इन सुधारों से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के लिए टेक्सटाइल सेक्टर भी पूरक बनेगा और गुजरात 2047 तक विकसित भारत के निर्माण में अग्रणी योगदान दे सकेगा।

# भावनगर मंडल के सीनियर रेलवे इंस्टिट्यूट का उद्घाटन एवं पुनर्विकसित रेलवे स्टेडियम व पार्किंग स्टैंड का लोकार्पण

**(जीएनएस)।** भावनगर रेलवे मंडल के सीनियर रेलवे इंस्टिट्यूट, भावनगर परा का उद्घाटन दिनांक 18.01.2026 (रविवार) को मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) श्री मनीष मलिक सहित मंडल के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

भावनगर रेलवे मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि सीनियर रेलवे इंस्टिट्यूट के नव-निर्मित भवन में रेलवे कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों के लिए खेल एवं मनोरंजन की आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। इंस्टिट्यूट की वार्षिक सदस्यता शुल्क मात्र 25/- निर्धारित किया गया है। सदस्यता प्राप्त करने वाले रेलवे कर्मचारी एवं उनके परिवारजन इनडोर खेलों जैसे बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कैरम तथा आउटडोर खेलों जैसे वॉलीबॉल एवं बास्केटबॉल का लाभ उठा सकेंगे।

कार्यक्रम के दौरान मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक द्वारा उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कर्मचारियों के सर्वांगीण विकास, स्वास्थ्य एवं कल्याण के लिए इस प्रकार की सुविधाओं के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर सीनियर रेलवे इंस्टिट्यूट परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया। उद्घाटन समारोह में ट्रेड यूनियन के पदाधिकारीगण, बड़ी संख्या में रेलवे कर्मचारी एवं उनके परिवार के सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री शैलेश कुमार परमार, मुख्य कर्मचारी एवं कल्याण निरीक्षक द्वारा किया गया।

इसी दिन, दिनांक 18.01.2026 (रविवार) को मंडल रेल प्रबंधक द्वारा पुनर्विकसित रेलवे स्टेडियम तथा मंडल कार्यालय परिसर में नवनिर्मित पार्किंग स्टैंड का भी लोकार्पण कर इन्हें रेलवे कर्मचारियों को समर्पित किया गया। भावनगर मंडल द्वारा कर्मचारियों के कल्याण एवं बेहतर कार्य परिवेश के लिए निरंतर किए जा रहे प्रयासों की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण पहल है।

# जनवरी में विदेशी निवेशकों ने निकाली भारी पूंजी, घरेलू संस्थागत निवेशकों ने संभाला बाजार का संतुलन

**(जीएनएस)।** नई दिल्ली। जनवरी महीने की शुरुआत से ही भारतीय शेयर बाजार विदेशी निवेशकों की बिकवाली के दबाव में रहा है। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने इस महीने अब तक लगभग 22,530 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी की है, जिससे बाजार में उतार-चढ़ाव और अस्थिरता देखने को मिली। यह प्रवृत्ति पिछले साल 2025 में भी जारी रही थी, जब एफपीआई ने पूरे साल के दौरान भारतीय शेयर बाजार से करीब 1.66 लाख करोड़ रुपये की पूंजी बाहर निकाली थी।

फिर भी, विदेशी निवेशकों की इस बिकवाली के बीच घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने बाजार को स्थिर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जनवरी के पहले 16 दिन के दौरान ही डीआईआई ने लगभग 34,076 करोड़ रुपये की शुद्ध खरीदारी की है। बीते वर्ष भी घरेलू निवेशक लगातार खरीदारी में सक्रिय रहे और उन्होंने कुल लगभग 7.44 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया। इसने वैश्विक

बाजारों में अस्थिरता के बावजूद भारतीय शेयर बाजार को अपेक्षाकृत स्थिर बनाए रखा और निवेशकों के भरोसे को बनाए रखने में मदद की।

विशेषज्ञों का मानना है कि एफपीआई की बिकवाली के पीछे कई आर्थिक और वैश्विक कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण अमेरिकी बॉन्ड यील्ड में बढ़ोतरी, डॉलर की मजबूती और वैश्विक व्यापार को लेकर अनिश्चितताएं हैं। इसके अलावा, भारत में ऊंची कंपनियों की वैल्यूएशन, मुद्रा में उतार-चढ़ाव और अमेरिका की संभावित टैरिफ नीतियों को लेकर निवेशकों में आशंकाएं भी बढ़ रही हैं। इन सभी कारकों ने विदेशी निवेशकों को जोखिम कम करने के लिए अपनी पूंजी बाहर निकालने के लिए प्रेरित किया है। विदेशी पूंजी के बाहर जाने का असर भारतीय रुपये पर भी दिखाई दे रहा है। जनवरी 2026 तक डॉलर के मुकाबले रुपये में लगभग पांच प्रतिशत की कमजोरी दर्ज की गई है। यह रुपये की स्थिरता के लिए चुनौतीपूर्ण है, खासकर तब जब वैश्विक आर्थिक माहौल अनिश्चितताओं से भरा हो।

खुराना सिक्योरिटीज एंड फाइनेंशियल सर्विसेज के सीईओ रवि चंदर खुराना का कहना है कि भारत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित व्यापार समझौते को लेकर स्पष्टता न होना भी विदेशी निवेशकों के मनोबल को प्रभावित कर रहा है। इसके साथ ही, मौजूदा तिमाही के मिश्रित परिणामों ने निवेशकों को सतर्क बना दिया है। उनके अनुसार, जब तक घरेलू बाजार को कोई मजबूत और सकारात्मक संकेत नहीं मिलता, विदेशी निवेशकों की बिकवाली का रुझान जारी रह सकता है।

विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि घरेलू निवेशकों की सक्रियता ही फिलहाल भारतीय शेयर बाजार को स्थिर बनाए रखने का सबसे बड़ा सहारा है। अगर डीआईआई की खरीदारी कमजोर पड़ती है, तो बाजार पर बिकवाली का दबाव और बढ़ सकता है। इसलिए, निवेशक और विशेषज्ञ दोनों ही बाजार की स्थिति पर लगातार नजर रखे हुए हैं और आगामी व्यापारिक निर्णयों में वैश्विक और घरेलू संकेतों को प्रमुखता से देख रहे हैं।

हालांकि, वित्तीय विश्लेषक यह भी बताते हैं कि यह प्रवृत्ति अस्थायी हो सकती है। यदि वैश्विक आर्थिक माहौल में सुधार होता है, डॉलर की मजबूती और अमेरिकी बॉन्ड यील्ड स्थिर होती है, और भारत-अमेरिका व्यापार समझौते में स्पष्टता आती है, तो विदेशी निवेशकों का बाजार में लौटना संभव है। तब भारतीय शेयर बाजार में नए निवेश और तेजी देखने को मिल सकती है।

इस पूरी परिस्थिति ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारतीय बाजार अब पूरी तरह वैश्विक आर्थिक परिवर्तनों से अलग नहीं है। विदेशी निवेशकों की गतिविधियों और घरेलू संस्थागत निवेशकों की सक्रियता दोनों ही बाजार की दिशा और स्थिरता निर्धारित करने में निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं।

# टाटा मुंबई मैराथन 2026 में मुंबई के साथ दौड़ी पश्चिम रेलवे

## 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में : 150 सदस्यीय पश्चिम रेलवे टीम ने फिटनेस, रेल सेफ्टी एवं नागरिक कर्तव्यों का दिया संदेश

**(जीएनएस)।** पश्चिम रेलवे ने आज मुंबई में आयोजित टाटा मुंबई मैराथन 2026 में सहभागिता कर उत्साहपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई तथा फिटनेस, अनुशासन और सुरक्षा जागरूकता का सशक्त संदेश दिया। पश्चिम रेलवे के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से युक्त 150 सदस्यीय टीम ने 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने के सम्मान एवं उत्सव के रूप में इस मैराथन में भाग लिया। यह सहभागिता राष्ट्रीय गौरव, सामूहिक अनुशासन तथा दैनिक जीवन में स्वस्थ जीवनशैली के महत्व का प्रतीक रही।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता ने पश्चिम रेलवे की टीम का नेतृत्व किया। इस दौरान कई वरिष्ठ रेल अधिकारियों ने भी मैराथन में सक्रिय रूप से भाग लिया, जिससे फिटनेस, संरक्षा तथा जनसंपर्क के प्रति नेतृत्व की प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हुई। इस टीम में स्टेशन मास्टर, टिकट जांच कर्मचारी, ट्रेन प्रबंधक, कोचिंग डिपो कर्मचारी तथा ट्रैकमैन जैसी प्रमुख फ्रंटलाइन एवं परिचालन श्रेणियों के कर्मचारी शामिल थे, जिन्होंने आधिकारिक यूनिफॉर्म में भाग लेकर आम जनता को सशक्त सामाजिक एवं सुरक्षा संदेश दिया। टीम ने रचनात्मक ब्रांडिंग एवं जनसंपर्क सामग्री के माध्यम से प्रभावशाली जागरूकता संदेश प्रदर्शित किए, जिनमें "रेल सुरक्षा के लिए दौड़", "पटरियों का सम्मान करें", "पटरी से दूर रहें – सुरक्षित रहें" जैसे नारे प्रमुख रूप से शामिल थे। इसके साथ ही "मुंबई की लाइफलाइन", "पश्चिम रेलवे परवाह करता है" तथा "मुंबई दौड़ती है क्योंकि हम दौड़ते हैं" जैसे पश्चिम रेलवे के ब्रांड संदेश भी प्रदर्शित किए गए। इस सहभागिता की एक विशिष्ट विशेषता यह रही कि टीम के 50 सदस्यों ने अपनी आधिकारिक युनिफार्म वर्दी में दौड़ लगाई, जिससे यह सशक्त संदेश गया कि शारीरिक फिटनेस व्यावसायिक उत्कृष्टता और व्यक्तिगत कल्याण का अभिन्न अंग है। यह प्रतीकात्मक सहभागिता माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा परिकल्पित फिट इंडिया मूवमेंट की भावना के अनुरूप रही तथा इस संदेश को और अधिक सुदृढ़ किया कि शारीरिक तंदुरुस्ती को सभी व्यवसायों और आयु वर्गों में दैनिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

पश्चिम रेलवे की यह सहभागिता केवल एक दौड़ तक सीमित न होकर कहीं अधिक व्यापक महत्व की रही। इससे संगठन की इस सोच को बल मिला कि शारीरिक फिटनेस जीवन की परिस्थितियों या पेशे से परे हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है तथा एक स्वस्थ कार्यबल ही सुरक्षित, अधिक दक्ष और विश्वसनीय सार्वजनिक सेवा उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुशासित एवं वर्दीधारी टीम की सशक्त उपस्थिति ने जनसंपर्क को भी सुदृढ़ किया तथा सुरक्षा के प्रति जागरूकता और जिम्मेदार नागरिक व्यवहार के महत्व को और अधिक प्रभावी ढंग से रेखांकित किया।

मैराथन के इस मंच का उपयोग पश्चिम रेलवे की ब्रांडिंग एवं सुरक्षा जागरूकता को और अधिक प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने के लिए भी किया गया। इसके अंतर्गत बैनर, प्लाकार्ड, हैंड पोस्टर, इत्यादि पर आधारित दृश्य तत्वों के माध्यम से संदेश प्रसारित किए गए। इसके साथ ही सुव्यवस्थित सोशल मीडिया प्रचार का सहारा लेकर इस अभियान की पहुंच को आयोजन स्थल से आगे बढ़ाकर व्यापक जनसमुदाय तक विस्तार दिया गया।

पश्चिम रेलवे इस आयोजन में भाग लेने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सराहना करती है, जिन्होंने गर्व और उद्देश्यपूर्ण भावना के साथ संगठन का प्रतिनिधित्व किया। पश्चिम रेलवे रेल सेफ्टी, जन-जागरूकता, फिटनेस तथा राष्ट्र निर्माण के मूल्यों को बढ़ावा देने हेतु निरंतर एवं सार्थक जनसंपर्क पहलों के माध्यम से अपनी प्रतिबद्धता को पुनः दोहराती है।

# विदेशी मुद्रा भंडार में मजबूती, सोने की हिस्सेदारी बढ़ने से भारत का बाहरी मोर्चा मजबूत

**(जीएनएस)।** नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा जारी ताजा आंकड़ों के अनुसार भारत का विदेशी मुद्रा भंडार एक बार फिर मजबूती के संकेत दे रहा है। 9 जनवरी को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार में 39 करोड़ डॉलर की वृद्धि हुई, जिससे कुल भंडार लगभग 687 अरब डॉलर तक पहुंच गया। इससे पहले पिछले सप्ताह भंडार में गिरावट देखी गई थी, लेकिन इस बार सोने के भंडार में हुई उल्लेखनीय बढ़ोतरी ने कुल भंडार को सहारा दिया।

विशेष रूप से, विदेशी मुद्रा भंडार का सबसे बड़ा हिस्सा विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों (Foreign Currency Assets - FCA) में होता है, जिसका स्तर लगभग 550 अरब डॉलर है। हालांकि, इस दौरान FCA में 1.12 अरब डॉलर की मामूली गिरावट दर्ज की गई, लेकिन सोने के भंडार में 1.5 अरब डॉलर की वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप सोने का कुल भंडार अब 112.83 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। इस वृद्धि ने भारत के बाहरी मोर्चे को और अधिक मजबूती प्रदान की है और इसे वैश्विक आर्थिक अस्थिरताओं के दौरान सुरक्षा की एक अतिरिक्त परत भी मिली है।

विदेशी मुद्रा भंडार का यह स्तर भारत की आयात जरूरतों को लगभग 11 महीनों तक पूरा करने के लिए पर्याप्त माना जाता है। केंद्रीय बैंक ने दिसंबर में हुई मौद्रिक नीति समीक्षा में भी स्पष्ट किया था कि

वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद भारत की आर्थिक स्थिति मजबूत और लचीली बनी हुई है। इस भंडार का महत्व केवल आयात भुगतान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बाहरी झटकों, जैसे वैश्विक वित्तीय संकट या मुद्रा अस्थिरताओं से निपटने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दीर्घकालिक रुझानों पर नजर डालें तो वर्ष 2025 में अब तक विदेशी मुद्रा भंडार में लगभग 56 अरब डॉलर की वृद्धि हुई है, जबकि 2024 में यह वृद्धि 20 अरब डॉलर से अधिक रही थी। इसके पहले, 2023 में भंडार में लगभग 58 अरब डॉलर का इजाफा हुआ था, लेकिन 2022 में यह गिरावट लगभग 71 अरब डॉलर की थी। विशेषज्ञों के अनुसार, भारतीय रिजर्व बैंक रणनीतिक रूप से डॉलर की खरीद-फरोख्त करता है और रुपये की स्थिरता बनाए रखने के लिए आवश्यक कदम उठाता है। इस दृष्टि से, विदेशी मुद्रा भंडार देश की आर्थिक मजबूती का एक महत्वपूर्ण संकेतक बन गया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि सोने की हिस्सेदारी में वृद्धि न केवल भंडार की मात्रा को बढ़ाती है, बल्कि यह निवेशकों और वैश्विक बाजारों के लिए भारत की आर्थिक सुरक्षा और भरोसे का प्रतीक भी है। यह संकेत देता है कि भारत बाहरी आर्थिक झटकों के खिलाफ अपनी तैयारी में सतर्क और सक्षम है। आने वाले महीनों में यदि वैश्विक बाजारों में उतार-चढ़ाव जारी रहते हैं, तो भी यह भंडार देश की आर्थिक सुरक्षा को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाएगा।

# पालनपुर-सामाखियाली खंड पर रेल परिचालन बहाल

**(जीएनएस)।** अहमदाबाद मंडल के पालनपुर–सामाखियाली खंड पर किडियानगर स्टेशन (सामाखियाली से चौथा स्टेशन) पर दिनांक 18.01.2026 को प्रातः 02:25 बजे डाउन लाइन में जा रही मालगाड़ी संख्या STPP/MDCC (लोको संख्या 49384) के दो वैगनों के पटरी से उतर जाने के कारण अप एवं डाउन दोनों लाइनों पर रेल परिचालन प्रभावित हुआ था। इस घटना में किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई है।

प्रातः 08:05 बजे अप एवं डाउन दोनों लाइनों पर सामान्य रेल परिचालन पुनः बहाल कर दिया गया है।

इस दौरान निम्नलिखित गाड़ियाँ प्रभावित रहीं:

गाड़ी संख्या 19406/19405 गांधीधाम–पालनपुर–गांधीधाम एक्सप्रेस पूर्णतः रद्द रही।

गाड़ी संख्या 12959 बांद्रा टर्मिनस–भुज एक्सप्रेस को भिलडी–मेहसाणा–विरमगाम–सामाखियाली मार्ग से परिवर्तित मार्ग से चलाया गया।

गाड़ी संख्या 20984 दिल्ली सराय रोहिल्ला–भुज एक्सप्रेस को भी भिलडी–मेहसाणा–विरमगाम–सामाखियाली मार्ग से परिवर्तित मार्ग से चलाया गया।

गाड़ी संख्या 22483 भगत की कोठी–गांधीधाम एक्सप्रेस को भिलडी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट किया गया।

घटना की सूचना मिलते ही राहत ट्रेन मौके पर रवाना हो गई तथा मण्डल रेल प्रबंधक अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मौके पर पहुँच गए।

# ईरान संकट में फंसा बासमती चावल का कारोबार, निर्यातकों की मुश्किलें बढ़ीं

**(जीएनएस)।** नई दिल्ली। ईरान में चल रहे राजनीतिक और सामाजिक अस्थिरता के हालात का असर अब सीधे भारत के व्यापारिक हितों पर देखने को मिल रहा है। बासमती चावल के प्रमुख निर्यातक देश के लिए ईरान हमेशा एक महत्वपूर्ण बाजार रहा है, लेकिन मौजूदा संकट ने इस रणनीतिक व्यापार को संकट में डाल दिया है। भारतीय निर्यातकों के सामने न केवल नए ऑर्डर ठप्प हुए हैं, बल्कि पहले भेजे गए चावल के कंसाइनमेंट का भुगतान भी लंबित है, जिससे व्यापारियों की मुश्किलें और बढ़ गई हैं। भारतीय चावल निर्यातक महासंघ (आईआरईएफ) के अनुसार चालू वित्त वर्ष के अप्रैल से नवंबर के बीच भारत ने ईरान को लगभग 5.98 लाख टन बासमती चावल का निर्यात किया था। लेकिन हाल ही में ईरान में विरोध-प्रदर्शन और

राजनीतिक अस्थिरता के कारण वहां की आर्थिक गतिविधियां ठप्प हो गई हैं। आईआरईएफ के अध्यक्ष प्रेम गर्ग के अनुसार, तेहरान समेत कई प्रमुख शहरों में बाजार बंद हैं और इंटरनेट सेवाओं पर पाबंदी के कारण ईरानी आयातकों से संपर्क टूट गया है। इसके परिणामस्वरूप कई कंसाइनमेंट ईरानी बंदरगाहों पर फंसे हुए हैं, और उनके भुगतान की प्रक्रिया अनिश्चितता की स्थिति में है। ईरान भारत के लिए बासमती चावल का अमेरिका से भी बड़ा खरीदार माना जाता है। यह तथ्य इस संकट को और गंभीर बनाता है, क्योंकि नए निर्यात ऑर्डर न मिलने से निर्यातकों की आय पर सीधा असर पड़ रहा है। इसके अलावा, अमेरिका की नीति के तहत ईरान के साथ व्यापार करने वाले देशों पर अतिरिक्त शुल्क और प्रतिबंधों का खतरा भी बना हुआ है, जिससे निर्यातक और भी सतर्क हो गए हैं। हालांकि, संकट का असर केवल निर्यात और भुगतान पर ही नहीं है, बल्कि घरेलू बाजारों पर भी दिखने लगा है। आईआरईएफ के अनुसार, बीते सप्ताह बासमती चावल की प्रमुख किस्मों के दामों में औसतन सात प्रतिशत की गिरावट आई है। उदाहरण के लिए, 1121 किस्म जहां 85 रुपये प्रति किलो बिक रही थी, वह अब 80 रुपये प्रति किलो पर आ गई है, वहीं 1121 सेला किस्म 75 रुपये प्रति किलो पर पहुंच गई है। अन्य किस्मों—1509, 1718 और 1401—में भी पांच से सात रुपये प्रति किलो तक की कमी दर्ज की गई है।

विशेषज्ञों का मानना है कि ईरान की मुद्रा रियाल के डॉलर के मुकाबले रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंचने और देशव्यापी विरोध-प्रदर्शनों ने वहां की आर्थिक स्थिति को और कमजोर कर दिया है। इसका सीधा असर भारत-ईरान व्यापार पर भी पड़ा है और फिलहाल यह स्थिति बनाए रखने की संभावना जताई जा रही है। निर्यातक चिंतित हैं कि अगर ईरान में हालात जल्द सामान्य नहीं हुए, तो न केवल मौजूदा भुगतान लंबित रह सकते हैं, बल्कि आने वाले महीनों में नए ऑर्डर भी प्रभावित हो सकते हैं।

इसके अलावा, इस संकट का एक अप्रत्यक्ष असर भारतीय किसानों और थोक बाजारों पर भी पड़ा है। चावल की कीमतों में गिरावट से किसानों की आमदनी प्रभावित होने लगी है और घरेलू थोक बाजारों में मांग और आपूर्ति के संतुलन पर अस्थिरता देखने को मिल रही है। इससे बासमती चावल की अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा और भारत की निर्यात संभावनाओं पर भी दबाव पड़ सकता है।

आईआरईएफ का कहना है कि सरकार और निर्यातक मिलकर स्थिति को संभालने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने यह भी सुझाव दिया है कि निर्यातकों को भुगतान जोखिम को कम करने के लिए अग्रिम भुगतान या बैंक गारंटी जैसी सावधानियां अपनानी चाहिए। वहीं, विशेषज्ञों का मानना है कि अगर ईरान में हालात जल्द सामान्य होते हैं, तो भारत का बासमती चावल व्यापार फिर से पटरी पर लौट सकता है।

फिलहाल, ईरान में राजनीतिक और सामाजिक अस्थिरता के कारण भारत का बासमती निर्यात संकट में फंसा हुआ है। यह स्थिति निर्यातकों, किसानों और घरेलू थोक बाजारों के लिए चिंता का विषय बनी हुई है, और आने वाले महीनों में इसका असर पूरी बासमती आपूर्ति श्रृंखला पर देखने को मिल सकता है।

# छतरपुर में इंसानियत शर्मसार: युवक से दरिंदगी, वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करने का आरोप

**(जीएनएस)**। मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के चंदला थाना क्षेत्र से एक ऐसी घटना सामने आई है जिसने पूरे इलाके को हिला कर रख दिया है। एक युवक ने तीन लोगों पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि उन्होंने उसे बंधक बनाकर न केवल बेरहमी से पीटा बल्कि सामूहिक रूप से उसके साथ यौन उत्पीड़न किया और पूरी घटना का वीडियो भी बना लिया। पीड़ित का कहना है कि आरोपियों ने वीडियो वायरल करने की धमकी देकर उसे लगातार डराया और चुप रहने का दबाव बनाया, जिसके कारण वह कई दिनों तक मानसिक प्रताड़ना झेलता रहा।

पीड़ित युवक के अनुसार घटना उस समय हुई जब वह अपने काम से घर लौट रहा था। रास्ते में पहले से घात लगाए बैठे तीन युवकों ने उसे रोक लिया। मामूली कहासुनी के बाद तीनों ने उस पर हमला कर दिया। युवक का आरोप है कि आरोपियों ने उसे एक सुनसान जगह ले जाकर लात-घूंसों और डंडों से बुरी तरह पीटा, जिससे वह बेसुध हो गया। इसके बाद उसके साथ अमानवीय कृत्य किया गया। इस दौरान आरोपियों में से एक ने पूरे घटनाक्रम का मोबाइल से वीडियो बना लिया।

घटना के बाद युवक बुरी तरह घायल हो गया। उसके गुप्तांग में गंभीर चोटें आईं और वह ठीक से चलने-फिरने में भी असमर्थ हो गया। किसी तरह वह आरोपियों के चंगुल से छूटकर अपने घर पहुंचा। घर पहुंचते ही उसने रोते हुए अपने माता-पिता को सारी आपबीती सुनाई। बेटे की हालत देखकर परिजन स्तब्ध रह गए और तुरंत उसे लेकर चंदला थाने पहुंचे। वहां लिखित शिकायत देकर आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की गई।

पुलिस ने शुरुआती तौर पर मारपीट की धाराओं में मामला दर्ज किया, लेकिन पीड़ित पक्ष का कहना है कि अपराध की गंभीरता को देखते हुए कड़ी धाराएं लगाई जानी चाहिए थीं। पुलिस अधिकारियों का तर्क है कि मौजूदा कानूनी प्रावधानों के तहत मेडिकल रिपोर्ट और तथ्यों की विस्तृत जांच के बाद ही आगे की धाराएं जोड़ी जाएंगी। आईपीसी की धारा 377 हटाए जाने के बाद ऐसे मामलों में कानूनी प्रक्रिया अपेक्षाकृत जटिल हो गई है, इसलिए हर पहलू की बारीकी से जांच जरूरी है।

स्थानीय थाने की कार्रवाई से असंतुष्ट होकर अगले दिन पीड़ित के परिजन एसडीओपी कार्यालय पहुंचे और उच्च अधिकारियों को आवेदन सौंपा। उन्होंने मांग की कि मामले की निष्पक्ष जांच हो, पीड़ित का दोबारा मेडिकल परीक्षण कराया जाए और आरोपियों को जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जाए। परिवार का कहना है कि आरोपियों का इलाके में प्रभाव है, जिसके चलते उन्हें लगातार धमकियां मिल रही हैं और समझौते का दबाव बनाया जा रहा है।

पीड़ित युवक ने बताया कि तीनों आरोपियों ने हैवानियत की सारी हदें पार कर दीं। वे बार-बार कहते रहे कि अगर किसी को कुछ बताया तो वीडियो सोशल मीडिया पर डाल देंगे। इसी डर से वह कुछ दिनों तक खामोश रहा, लेकिन शारीरिक दर्द और मानसिक पीड़ा इतनी बढ़ गई कि सच बताना ही एकमात्र रास्ता बचा। युवक की हालत देखकर डॉक्टरों ने भी गहरी चोटों की पुष्टि की है और उसे विशेष इलाज दिया जा रहा है।

घटना की खबर फैलते ही पूरे इलाके में आक्रोश का माहौल है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस तरह की वारदातें समाज के लिए कलंक हैं और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। सामाजिक संगठनों ने भी प्रशासन से हस्तक्षेप कर त्वरित न्याय दिलाने की मांग की है।

छतरपुर के सीएसपी अरुण कुमार सोनी ने बताया कि पुलिस मामले को बेहद गंभीरता से ले रही है। पीड़ित का मेडिकल परीक्षण कराया जा चुका है और फोरेंसिक साक्ष्य जुटाए जा रहे हैं। आरोपियों की तलाश में टीमों का गठन कर दबिश दी जा रही है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि जांच पूरी पारदर्शिता से होगी और दोषियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा।

यह घटना केवल एक अपराध नहीं बल्कि समाज के लिए चेतावनी है कि विकृत मानसिकता किस हद तक जा सकती है। पीड़ित परिवार न्याय की उम्मीद में प्रशासन की ओर देख रहा है और पूरे क्षेत्र की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि कानून इस दरिंदगी का कैसा जवाब देता है।

# मतदाता सूची संशोधन पर सियासी संग्राम बर्दवान में मजिस्ट्रेट दफ्तर बना रणक्षेत्र

**(जीएनएस)**। पश्चिम बंगाल में इस वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले राजनीतिक तापमान लगातार चढ़ता जा रहा है। मतदाता सूची संशोधन प्रक्रिया यानी एसआईआर (स्पेशल इनक्वायरी रिवीजन) को लेकर राज्य में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी आमने-सामने आ गई हैं। इसी कड़ी में शनिवार को पूर्वी बर्दवान स्थित जिला मजिस्ट्रेट कार्यालय के सामने ऐसा तनाव पैदा हुआ कि प्रशासनिक परिसर कुछ देर के लिए सियासी अखाड़े में तब्दील हो गया। दोनों दलों के कार्यकर्ता एक-दूसरे पर गंभीर आरोप लगाते हुए भिड़ गए और नौबत धक्का-मुक्की तक पहुंच गई।

जानकारी के अनुसार एसआईआर हियरिंग के दौरान फॉर्म नंबर 7 जमा करने को लेकर विवाद की शुरुआत हुई। भाजपा कार्यकर्ताओं का आरोप था कि सब-डिविजनल मजिस्ट्रेट राजर्षि नाथ जानबूझकर उनके फॉर्म स्वीकार नहीं कर रहे हैं और सत्ताधारी दल के इशारे पर काम कर रहे हैं। इसी के विरोध में भाजपा समर्थकों ने कार्यालय के बाहर धरना देना शुरू कर दिया। थोड़ी ही देर में वहां तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता भी पहुंच गए और दोनों पक्षों के बीच तीखी नारेबाजी होने लगी। माहौल इतना गरमाया कि एक-दूसरे के खिलाफ अपशब्दों का प्रयोग होने लगा और देखते ही देखते स्थिति नियंत्रण से बाहर होने लगी।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक पहले बहस हुई, फिर धक्का-मुक्की और हाथापाई की नौबत आ गई। तृणमूल कांग्रेस का कहना है कि भाजपा कार्यकर्ता सुनवाई प्रक्रिया में जानबूझकर बाधा डाल रहे थे और अफरा-तफरी फैलाने की कोशिश कर रहे थे, ताकि प्रशासनिक कामकाज ठप हो जाए। वहीं भाजपा ने इसे लोकतांत्रिक अधिकारों पर हमला बताते हुए आरोप लगाया कि सत्ताधारी दल मतदाता सूची में हेरफेर कर चुनाव को प्रभावित करना चाहता है।

तनाव की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में पुलिस बल मौके पर पहुंच गया। अधिकारियों ने पहले दोनों पक्षों को समझाकर शांत कराने की कोशिश की, लेकिन भाजपा का एक समूह पुलिस से ही उलझ गया। आरोप है कि कुछ कार्यकर्ताओं ने पुलिसकर्मियों के साथ धक्का-मुक्की की, जिसके बाद हालात और बिगड़ गए। पुलिस ने सख्ती दिखाते हुए भाजपा के चार कार्यकर्ताओं को हिरासत में ले लिया। गिरफ्तारी के बाद भाजपा समर्थकों में और आक्रोश फैल गया और उन्होंने इसे प्रशासन की एकतरफा कार्रवाई करार दिया।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए प्रशासन ने जिला मजिस्ट्रेट कार्यालय परिसर को खाली करा लिया और इलाके में रैपिड एक्शन फोर्स तैनात कर दी गई। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि फिलहाल हालात नियंत्रण में हैं, लेकिन किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए कड़ी निगरानी रखी जा रही है। कार्यालय के आसपास अतिरिक्त बैरिकेडिंग कर दी गई है और बिना अनुमति किसी को अंदर जाने नहीं दिया जा रहा।

इस घटना ने एक बार फिर संकेत दे दिया है कि बंगाल में चुनावी मुकाबला कितना तीखा होने वाला है। मतदाता सूची संशोधन जैसी प्रशासनिक प्रक्रिया भी अब राजनीतिक टकराव का केंद्र बन चुकी है। दोनों दल एक-दूसरे पर लोकतंत्र को कमजोर करने के आरोप लगा रहे हैं। आने वाले दिनों में जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आएंगे, ऐसे विवाद और बढ़ने की आशंका जताई जा रही है। बर्दवान की इस झड़प ने पूरे राज्य की राजनीति में नई गर्मी घोल दी है और यह साफ कर दिया है कि चुनाव से पहले बंगाल का सियासी माहौल और उग्र रूप ले सकता है।

# सिंगूर की धरती से पीएम मोदी का आह्वान बंगाल में खत्म हो 15 साल का महाजंगलराज

**(जीएनएस)**। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के ऐतिहासिक सिंगूर में विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए राज्य की तृणमूल कांग्रेस सरकार पर तीखा हमला बोला और बंगाल में सत्ता परिवर्तन का खुला आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पूरा बंगाल आज एक ही संकल्प के साथ खड़ा है कि 15 साल के महाजंगलराज को समाप्त करना है और असली परिवर्तन लाना है। प्रधानमंत्री ने जनसैलाब की ओर इशारा करते हुए कहा कि यह भीड़ बता रही है कि पश्चिम बंगाल नई कहानी लिखने के लिए तैयार हो चुका है और जनता बदलाव का मन बना चुकी है।

पीएम मोदी ने अपने भाषण में कहा कि जिस तरह बिहार की जनता ने एनडीए को मौका देकर जंगलराज की वापसी रोकी, ठीक उसी तरह अब बंगाल की जनता भी टीएमसी के महाजंगलराज को विदा करने के लिए तैयार बैठी है। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार केंद्र की जनकल्याणकारी योजनाओं को लोगों तक पहुंचने ही नहीं देती। प्रधानमंत्री ने कहा कि टीएमसी की दुश्मनी भाजपा से हो सकती है, लेकिन यह सरकार बंगाल के गरीबों, किसानों और नौजवानों से दुश्मनी निकाल रही है। उन्होंने कहा कि यहां के युवाओं के भविष्य के साथ खुला खिलवाड़ हो रहा है और शिक्षा व्यवस्था को पूरी तरह राजनीति का अखाड़ा बना दिया गया है। प्रधानमंत्री ने विशेष रूप से पीएमश्री स्कूल योजना का जिक्र करते हुए कहा कि देश के अन्य राज्यों में बच्चे आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पा रहे हैं, लेकिन बंगाल की सरकार जानबूझकर यहां के बच्चों को इस सुविधा से वंचित रख रही है। उन्होंने जनता से सवालिया अंदाज में पूछा कि जो सरकार आपके बच्चों का भविष्य तबाह कर रही हो, उसे बने रहने देना चाहिए क्या। भीड़ ने जोरदार जवाब में 'नहीं' के नारे लगाए। पीएम मोदी ने कहा कि देश का मतदाता अब जाग चुका है और जो भी सरकार विकास के रास्ते में रुकावट बनेगी, उसे जनता सजा जरूर देगी। उन्होंने दिल्ली का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां भी एक सरकार केंद्र की योजनाओं को लागू नहीं होने देती थी। आयुष्मान भारत जैसी योजना गरीबों तक नहीं पहुंचने दी गई, लेकिन जैसे ही जनता ने सत्ता बदली, आज दिल्ली के गरीबों को मुफ्त इलाज मिलने लगा है। प्रधानमंत्री ने भरोसा जताया कि बंगाल में भी भाजपा की सरकार बनते ही आयुष्मान भारत योजना लागू होगी और लाखों गरीब परिवारों को इलाज की चिंता से मुक्ति मिलेगी। उन्होंने जोर देकर कहा कि डबल इंजन सरकार ही बंगाल को विकास की मुख्यधारा में ला सकती है, जैसा देश के अन्य भाजपा शासित राज्यों में हो रहा है।

पीएम मोदी ने कानून-व्यवस्था को लेकर भी ममता सरकार को कठघरे में खड़ा किया। उन्होंने कहा कि टीएमसी के राज में बेटियां सुरक्षित नहीं हैं, शिक्षा तंत्र माफियाओं के कब्जे में है और हर काम पर सिंडिकेट टैक्स वसूला जा रहा है। उद्योगपति बंगाल आने से डरते हैं, क्योंकि यहां निवेश से पहले रंगदारी देनी पड़ती है। उन्होंने कहा कि जब तक सिंडिकेट और माफिया राज खत्म नहीं होगा, तब तक न उद्योग लगेंगे, न रोजगार मिलेगा। भाजपा सरकार बनते ही इस लूटतंत्र को जड़ से खत्म किया जाएगा। प्रधानमंत्री ने घुसपैठ के मुद्दे पर भी तृणमूल कांग्रेस पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने आरोप लगाया कि टीएमसी सरकार देश की सुरक्षा से खिलवाड़ कर रही है और घुसपैठियों को संरक्षण दे रही है, क्योंकि वे उसका वोटबैंक हैं। पीएम मोदी ने कहा कि घुसपैठिए बंगाल की संस्कृति, संसाधन और सुरक्षा—तीनों के लिए खतरा हैं। अब समय आ गया है कि इनकी पहचान कर इन्हें वापस भेजा जाए और सीमाओं को पूरी तरह सुरक्षित किया जाए। उन्होंने युवाओं से विशेष अपील की कि वे इस खतरे को समझें और राष्ट्रहित में मतदान करें। सभा से पहले प्रधानमंत्री ने सिंगूर में 830 करोड़ रुपये की विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के लिए पूर्वी भारत का विकास जरूरी है और केंद्र सरकार इसी लक्ष्य के साथ लगातार काम कर रही है। पीएम मोदी ने बताया कि एक दिन पहले ही पश्चिम बंगाल से देश की पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन शुरू हुई है और राज्य को कई नई अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनों की सौगात मिली है। आज भी तीन नई अमृत भारत ट्रेनें प्रारंभ की गई हैं, जिनमें से एक उनके संसदीय क्षेत्र काशी को बंगाल से जोड़ेगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि रेल, सड़क, बंदरगाह और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में केंद्र सरकार अभूतपूर्व निवेश कर रही है, लेकिन राज्य सरकार सहयोग नहीं करती। उन्होंने भरोसा दिलाया कि भाजपा की सरकार बनते ही बंगाल में विकास की रफ्तार कई गुना तेज होगी। पीएम मोदी का पूरा भाषण परिवर्तन के संकल्प, राष्ट्रवाद और विकास के वादे के इर्द-गिर्द घूमता रहा। सिंगूर की धरती से उन्होंने साफ संदेश दिया कि आने वाला चुनाव केवल सत्ता का नहीं, बल्कि बंगाल के भविष्य का चुनाव है और जनता को तय करना है कि उसे जंगलराज चाहिए या सुशासन।

# राजस्थान में कर्ज के बोझ ने बेटे को बना दिया चोर, 24 से अधिक वारदातों का खुलासा

**(जीएनएस)**। धौलपुर। पिता पर चढ़े कर्ज के बोझ ने एक बेटे को ऐसा रास्ता चुनने पर मजबूर कर दिया, जिसने उसे अपराध की दुनिया में धकेल दिया। राजस्थान के धौलपुर जिले में चोरी की एक चौंकाने वाली कहानी सामने आई है, जहां एक युवक ने अपने परिवार की आर्थिक तंगी दूर करने के लिए एक के बाद एक 24 से अधिक चोरियों को अंजाम दे डाला। निहालगंज थाना पुलिस ने इस शातिर चोर को गिरफ्तार कर 12 बड़ी वारदातों का खुलासा किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से सोने-चांदी के आभूषण और नकदी सहित अब तक 2 लाख 70 हजार रुपये बरामद किए हैं। मामले की शुरुआत 26 दिसंबर को हुई, जब मानसरोवर कॉलोनी निवासी स्वेता नाम की महिला ने निहालगंज थाने में शिकायत दर्ज कराई कि उसके बंद मकान का ताला तोड़कर चोर लाखों रुपये की नकदी और गहने ले गए हैं। सूचना मिलते ही पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली गई और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर चोरों की तलाश तेज कर दी गई। जांच के दौरान सामने आया कि इस वारदात का मास्टरमाइंड अरमार नाम का युवक है, जो

अपने साथियों के साथ मिलकर शहर में बंद मकानों को निशाना बनाता था। पुलिस के अनुसार वारदात के बाद आरोपी अपने दो साथियों को छोड़कर फरार हो गया और ट्रक चलाने के काम में लग गया। वह यूपी, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के अलग-अलग इलाकों में ट्रक चलाता रहा ताकि पुलिस से बच सके। लोकेशन ट्रेसिंग और कॉल डिटेल रिकॉर्ड के आधार पर पुलिस लगातार उसकी तलाश कर रही थी, लेकिन शातिर आरोपी बार-बार ठिकाना बदल देता था। आखिरकार जब वह अपने गांव आया और फिर कहीं बाहर जाने की फिराक में था, तभी मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने सुआ के बाग इलाके से उसे दबोच लिया। पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी छह महीने पहले ही मध्य प्रदेश की जेल से छूटकर बाहर आया था। बाहर आते ही उसने फिर से चोरी की घटनाओं को अंजाम देना शुरू कर दिया। इस गिरोह के दो अन्य सदस्यों को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। पूछताछ में आरोपी ने कबूल किया कि वह दिन में बाइक से शहर के अलग-अलग इलाकों में घूमकर रेकी करता था। जिन घरों में ताला लगा मिलता, उन्हें रात के समय निशाना बनाया जाता था। गिरोह बेहद सुनियोजित तरीके से काम करता था, जिससे लंबे समय तक पुलिस के हाथ खाली रहे। पूछताछ के दौरान आरोपी ने जो वजह बताई, वह उतनी ही दर्दनाक थी जितनी अपराध की कहानी। उसने बताया कि उसके पिता पर भारी कर्ज था और घर की आर्थिक हालत बेहद खराब हो चुकी थी। कर्ज चुकाने का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था, इसलिए उसने चोरी का रास्ता अपना लिया। शुरुआत में छोटी-मोटी वारदातें कीं, लेकिन धीरे-धीरे यह आदत बन गई और वह शातिर अपराधी बनता चला गया। पुलिस अब उससे अन्य घटनाओं के बारे में भी पूछताछ कर रही है और आशंका है कि कई और वारदातों का खुलासा हो सकता है।

इस घटना ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि आर्थिक मजबूरी और बेरोजगारी किस तरह युवाओं को अपराध की ओर धकेल देती है। पुलिस का कहना है कि गिरोह के नेटवर्क और चोरी के माल की खरीद-फरोख्त करने वालों की भी जांच की जा रही है। इलाके के लोगों ने पुलिस की कार्रवाई पर संतोष जताया है, लेकिन साथ ही यह भी मांग की है कि ऐसे मामलों में सामाजिक स्तर पर भी समाधान खोजे जाएं, ताकि कोई और युवक मजबूरी में अपराध का रास्ता न चुने।

# रांची की सड़कों पर गूंजीं गोलियां वर्चस्व की जंग में लहूलुहान हुई राजधानी

**(जीएनएस)**। झारखंड की राजधानी रांची शनिवार की देर रात अचानक गोलियों की तड़तड़ाहट से दहल उठी। पंडरा थाना क्षेत्र के पिस्का मोड़ के पास हुए गैंगवार ने पूरे शहर में दहशत फैला दी। वर्चस्व और अवैध धंधों से जुड़े पैसों के बंटवारे को लेकर दो आपराधिक गिरोह आमने-सामने आ गए और देखते ही देखते विवाद खूनी संघर्ष में बदल गया। इस गोलीबारी में तीन युवक गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें पुलिस ने तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया। जानकारी के अनुसार घटना तेल मिल गली के पास उस समय हुई जब दो अलग-अलग गिरोहों के सदस्य आपसी बातचीत के लिए इकट्ठा हुए थे। शुरुआती दौर में सब कुछ सामान्य दिख रहा था और खाने-पीने का दौर चल रहा था, लेकिन थोड़ी ही देर में पैसों के बंटवारे और इलाके में दबदबा कायम रखने को लेकर बहस शुरू हो गई। आरोप है कि संदीप थापा और संजय पांडे गिरोह से जुड़े बदमाशों के बीच जमीन के कारोबार से मिली रकम को लेकर पुराना विवाद चल रहा था। यही तनातनी अचानक हिंसा में बदल गई।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक पहले दोनों पक्षों के बीच गाली-गलौज और धक्का-मुक्की हुई, फिर कुछ ही क्षणों में एक गुट ने हथियार निकाल लिए। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता, ताबड़तोड़ गोलियां चलने लगीं। गोली लगने से आकाश, रवि और विकास नाम के तीन युवक लहूलुहान होकर गिर पड़े। आसपास मौजूद लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे और इलाके में अफरा-तफरी मच गई।

घटना की सूचना मिलते ही रांची पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। सिटी एसपी पारस राणा, कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोय सहित बड़ी संख्या में पुलिस बल मौके पर पहुंचा। घायलों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनकी हालत पर डॉक्टर नजर रखे हुए हैं। पुलिस ने इलाके की घेराबंदी कर दी और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू कर दी, ताकि हमलावरों की पहचान की जा सके।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि यह सीधा-सीधा गैंगवार का मामला है, जिसमें दोनों गिरोह लंबे समय से एक-दूसरे को चुनौती देते आ रहे थे। जमीन के अवैध धंधे, रंगदारी और वसूली से जुड़े पैसों को लेकर इनके बीच कई बार टकराव हो चुका था। शनिवार की रात हुआ विवाद उसी कड़ी का सबसे खतरनाक रूप साबित हुआ। पुलिस टीमें संदिग्ध ठिकानों पर लगातार छापेमारी कर रही हैं और कई लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

रांची में बीते कुछ दिनों से अपराध की घटनाओं में अचानक बढ़ोतरी देखी जा रही है। पंडरा इलाके की इस वारदात से पहले बुढ़मू थाना क्षेत्र के चांया गांव में भी एक युवक विक्की नायक की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई थी। वह कुएं में लगी मोटर पंप चोरी के आरोप में कुछ लोगों के हत्थे चढ़ गया था। मृतक की मां भूटकी देवी ने सात नामजद समेत कई अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया, जिसके बाद पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

लगातार हो रही इन घटनाओं ने राजधानी की कानून-व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय लोग दहशत में हैं और खुलेआम हथियारों के इस्तेमाल से सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है। पुलिस प्रशासन का दावा है कि अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी और किसी भी गिरोह को सिर उठाने नहीं दिया जाएगा, लेकिन जनता यह जानना चाहती है कि आखिर कब रांची की सड़कों से गोलियों का यह शोर थमेगा।

# बूंदी में भालू का आतंक, महिला पर जानलेवा हमला, वन विभाग की कार्रवाई पर उठे सवाल

**(जीएनएस)**। बूंदी। राजस्थान के बूंदी जिले के डाबी थाना क्षेत्र में भालू के हमले की एक भयावह घटना सामने आई है, जिसमें एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। हाथ, पैर और मुंह पर गहरे घाव होने के कारण महिला की हालत नाजुक बताई जा रही है। यह घटना केरुनदी गांव के पास धनेश्वर इलाके में उस समय हुई, जब महिला जंगल के रास्ते अपने घर की ओर लौट रही थी। जानकारी के अनुसार कुछ घंटे पहले ही इसी भालू को एक कुएं से रेस्क्यू कर बाहर निकाला गया था और बाद में उसे जंगल की ओर छोड़ दिया गया था। परिजनों का आरोप है कि वन विभाग की लापरवाही के कारण यह जानलेवा हमला हुआ और अगर समय रहते सावधानी बरती जाती तो यह हादसा टाला जा सकता था।

घटना के संबंध में बताया गया कि केरुनदी निवासी मतीया बाई पत्नी कालुला रोज की तरह अपने काम से लौट रही थीं। जैसे ही वह गांव के नजदीक पहुंचीं, अचानक झाड़ियों से निकलकर भालू ने उन पर हमला कर दिया। भालू के पंजों से उनके चेहरे और शरीर के कई हिस्सों पर गहरे जख्म हो गए। महिला की चीख-पुकार सुनकर आसपास मौजूद लोग दौड़े और किसी तरह भालू को भगाया, जिसके बाद

परिजन तुरंत उन्हें अस्पताल लेकर पहुंचे। डॉक्टरों के अनुसार चोटें गहरी हैं और संक्रमण का खतरा बना हुआ है। इस घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत का माहौल है और लोग जंगल के रास्तों पर जाने से डरने लगे हैं। परिजनों का कहना है कि यह भालू उसी दिन सुबह एक कुएं में गिर गया था, जिसकी सूचना ग्रामीणों ने वन विभाग को दी थी। आरोप है कि वन विभाग की टीम देरी से मौके पर पहुंची और बिना ट्रेंकुलाइज किए ही भालू को बाहर निकालकर खुले जंगल की ओर छोड़ दिया गया। लोगों का कहना है कि भालू डरा हुआ और आक्रामक था, ऐसे में उसे सुरक्षित तरीके से पकड़कर दूर जंगल में छोड़ना चाहिए था। ग्रामीणों का मानना है कि विभाग ने आवश्यक प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया, जिसका खामियाजा एक निर्दोष महिला को भुगतना पड़ा।

घटना को लेकर ग्रामीणों में भारी आक्रोश है। लोगों ने वन विभाग पर गंभीर लापरवाही के आरोप लगाते हुए कहा कि यदि भालू को बेहोश कर नियंत्रित तरीके से स्थानांतरित किया जाता तो वह इंसानी आबादी की तरफ नहीं आता। गांव वालों का यह भी कहना है कि इलाके में पहले भी जंगली जानवरों की आवाजाही बढ़ी है, लेकिन विभाग ने सुरक्षा के कोई ठोस इंतजाम नहीं किए। हालांकि परिजनों की ओर से अभी तक डाबी थाने में लिखित शिकायत दर्ज नहीं कराई गई है, लेकिन वे कानूनी कार्रवाई पर विचार कर रहे हैं। उधर डाबी वन विभाग के एसीएफ नितिन सैनी ने बताया कि ग्रामीणों की सूचना पर टीम सुबह ही मौके पर पहुंच गई थी और क्रेन तथा अन्य संसाधनों की मदद से भालू को कुएं से बाहर निकाला गया। उनके अनुसार भालू को निकालने के बाद जंगल की तरफ छोड़ा गया था, लेकिन उसी रास्ते से कुछ महिलाएं गुजर रही थीं और इसी दौरान भालू ने हमला कर दिया। विभाग का कहना है कि रेस्क्यू के दौरान सभी संभव सावधानियां बरती गई थीं, फिर भी यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना हो गई।

फिलहाल प्रशासन ने इलाके में सतर्कता बढ़ा दी है और ग्रामीणों को जंगल की ओर न जाने की सलाह दी गई है। वन विभाग की टीम भालू की गतिविधियों पर नजर रख रही है ताकि दोबारा ऐसा हादसा न हो। घायल महिला का इलाज प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है, वहीं ग्रामीणों की मांग है कि पीड़ित परिवार को उचित मुआवजा दिया जाए और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए ठोस रणनीति बनाई जाए। इस घटना ने एक बार फिर मानव और वन्यजीव संघर्ष के बढ़ते खतरे को उजागर कर दिया है, जिस पर गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत महसूस की जा रही है।